विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 9 | अंक: 33 | मार्च, 2016

विश्व हिंदी दिवस 2016

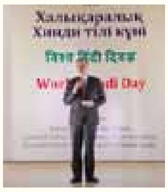

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विश्व भर में हिंदी की गतिविधियाँ व कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ, संगोष्ठी, सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि परम्परागत रूप से आयोजित होते हैं। इस वर्ष भारत, मॉरीशस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, जमैका, रूस, अफ़्रीका, नेपाल आदि अन्य कई देशों में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कई गतिविधियाँ आयोजित हुईं। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस द्वारा तथा विश्व भर में आयोजित विश्व हिंदी दिवस की रिपोर्ट पढ़ें *पृ. 2-3-4-5* पर।

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के आधिकारिक कार्यारंभ की 8वीं वर्षगाँठ

15 फरवरी, 2016 को विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने आधिकारिक कार्यारंभ की 8वीं वर्षगाँठ समारोह का आयोजन किया। सचिवालय ने 11 फरवरी, 2008 को औपचारिक रूप से कार्यारंभ किया था। आगे की रिपोर्ट पढ़ें *पृ. 6* पर।

श्री अजामिल माताबदल का निधन

14 मार्च, 2016 को मॉरीशस के वरिष्ठ हिंदी सेवी, लेखक व प्रचारक तथा विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के पूर्व सदस्य, श्री अजामिल माताबदल का 71 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। *पृ. 15*

विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद के नए सदस्य

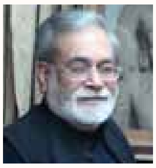
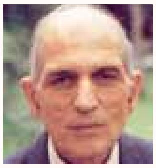

मॉरीशस सरकार व भारत सरकार द्वारा मनोनीत हिंदी के क्षेत्र में ख्याति-प्राप्त दो विद्वान सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य होते हैं। इस वर्ष मॉरीशस सरकार द्वारा डॉ. उदय नारायण गंगू को मनोनीत किया गया। भविष्य में मॉरीशसीय पक्ष की ओर से डॉ. गंगू व श्री सत्यदेव टेंगर तथा भारतीय पक्ष की ओर से प्रो. सत्यव्रत शास्त्री व प्रो. नरेंद्र कोहली सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य होंगे। *पृ. 8*

फ़िजी में राष्ट्रीय स्तर की 'हिंदी परिषद' का गठन

16 जनवरी, 2016 को भारतीय मूल के फ़िजी निवासियों को सम्मिलित करने वाली सभी संस्थाओं, फिजी के तीन विश्वविद्यालयों, शिक्षा मंत्रालय व भारतीय उच्चायोग ने समन्वय स्थापित करते हुए राष्ट्रीय स्तर की 'हिंदी परिषद' का औपचारिक रूप से गठन किया। यह पहल हिंदी की सक्रिय संस्थाओं के अभाव को दूर करने के उद्देश्य से की गई। *पृ. 7*

प्रो. च्यांग चिंगख्वै को साहित्य अकादमी की 'डॉ. आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता'

27 जनवरी, 2016 को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पीकिंग विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई विभाग के प्रोफ़ेसर व दक्षिण एशियाई केंद्र के निदेशक, डॉ. च्यांग चिंगख्वै को 'डॉ. आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता' प्रदान की गई। *पृ. 8*

आगे पढ़ें :

- चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी पृ. 7
- श्री अरविंद कुमार की पुस्तक 'शब्दवेध' का लोकार्पण पृ. 12
- श्रीमती पूनम जुनेजा की पुस्तक 'प्रेम, विवाह और खिटपिट' का लोकार्पण पृ. 12
- 'गोडसे @ गांधी. कॉम' व 'मास्टर साब' के सिंहली भाषा में अनुवाद का लोकार्पण पृ. 12
- श्री रवींद्र कालिया, श्री अनिरुद्ध नीरव व श्री अमर सिंह रमण को श्रद्धांजलि पृ. 15

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के भवन निर्माण के लिए टेंडर जारी

विश्व हिंदी सचिवालय के शुभचिंतकों व समस्त विश्व हिंदी समाज के साथ यह खबर साझा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि 23 मार्च, 2016 को विश्व हिंदी सचिवालय के नए भवन के निर्माण का टेंडर जारी किया गया। सभी आधुनिक सुविधाओं से सजा यह मुख्यालय मॉरीशस में भारत सरकार द्वारा बनाया जाएगा। इसके लिए मॉरीशस सरकार ने मंत्रालय मुख्यालय, इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र और अनेक शिक्षण संस्थाओं के निकट 'प्राइम लैंड' मुहैया करवाया है। पूरा विश्वास है कि सचिवालय का नया भवन 2018 में मॉरीशस में आयोजित होनेवाले 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन से पूर्व बनकर तैयार हो जाएगा साथ ही सचिवालय के कार्य वहीं से सुचारु रूप से होने लगेंगे।

ISSN 1694-2485

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2016

14 जनवरी, 2016 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया।

समारोह के मुख्य अतिथि, मॉरीशस गणराज्य की राष्ट्रपति, महामहिम श्रीमती आमीना गरीब-फ़ाकिम, जी.सी.एस.के, सी.एस.के., पीएचडी, डी.एस.सी. रहीं। शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन तथा भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सचिवालय ने इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के विशेष अवसर पर ऑस्ट्रेलियन नेशनल युनिवर्सिटी, कैनबेरा के एशिया व प्रशांत महासागरीय अध्ययन कॉलेज के वरिष्ठ प्राध्यापक, डॉ. पीटर फ्रीडलैंडर को मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों के समक्ष प्रस्तुत किया जिन्होंने '21वीं शताब्दी में हिंदी शिक्षण : ऑस्ट्रेलिया और एशियाई-पेसिफ़िक संदर्भ में' विषय पर वक्तव्य दिया।

महामहिम श्रीमती आमीना गरीब-फ़ाकिम ने अपने वक्तव्य में इस तथ्य को उभारा कि ***"हम जब विश्व भाषा की बात करते हैं तो हमें सबसे पहले आज की दुनिया को समझ लेना चाहिए और फिर उसी के हिसाब से अपनी भाषा को भी समझना चाहिए। आज की दुनिया खुली सोच की दुनिया है, प्रौद्योगिकी, व्यापार, मीडिया, पर्यटन, प्रवासन, कनेक्टिविटी आदि सभी ने इस दुनिया का चेहरा बदल दिया है। आज की दुनिया, आज की पीढ़ी किसी भी सीमा को नहीं मानती है। ऐसे में हमें अपनी भाषा को भी ऐसा बनाना चाहिए जो खुली सोच के साथ सब को स्वीकार करे। अगर हम अपनी भाषा को बंधन में जकड़कर रखेंगे तो वह विश्व-भाषा नहीं बन पाएगी।"*** आगे महात्मा गांधी का उदाहरण देते हुए आप कहती हैं कि ***"जिस तरह बिना किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती से उन्होंने पूरी दुनिया से अपनी बात मनवा ली उसी तरह आज हिंदी भाषा मात्र प्रेम तथा अपनाने की ताकत से विश्वभर में फैल रही है, चारों तरफ़ सम्मान पा रही है।"***

माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने सचिवालय को बधाई दी तथा मुख्य रूप से गत साल भोपाल, भारत में संपन्न '10वें विश्व हिंदी सम्मेलन' के सकारात्मक परिणामों पर संतुष्टि प्रकट की। उनके अनुसार यह सम्मेलन हिंदी भाषा की शक्ति तथा सामर्थ्य का प्रतीक रहा। आगे उन्होंने कहा कि ***"भारतीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा समस्त भारतीय समुदाय का मॉरीशस के प्रति प्रेम, विश्वास तथा आदर यह प्रमाणित करता है कि मॉरीशस हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रचारित-प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।"*** साथ ही उन्होंने यह घोषणा की कि ***"अगला 'विश्व हिंदी सम्मेलन' जो 2018 में तय है, वह मॉरीशस के पवित्र भूमि पर ही होगा। यह हिंदी प्रेमियों सहित हरेक मॉरीशस वासी के लिए बड़े गर्व की बात है।"***

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल ने अपने वक्तव्य में हिंदी भाषा की सरलता तथा सौंदर्य को रेखांकित किया जिसके लिए हम इससे सांस्कृतिक व भावात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। उन्होंने मॉरीशस सरकार तथा भारतीय सरकार के द्विपक्षीय संबंध व मित्रता पर बल दिया। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सचिवालय के माध्यम से हिंदी भाषा एक विश्व-भाषा बनने में सफल हो पाई है।

समारोह के आरंभ में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने गत वर्षों की मेहनत व उपलब्धियों का ब्योरा देते हुए मार्च 2015 का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यह साल सचिवालय के लिए भविष्य की दिशा तय करनेवाला साल रहा क्योंकि मार्च महीने में भारतीय प्रधान मंत्री महामहिम श्री नरेन्द्र मोदी तथा मॉरीशसीय प्रधान मंत्री महामहिम श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ द्वारा सचिवालय के मुख्यालय निर्माण का शुभारंभ हुआ। यह सचिवालय पर एक गहन विश्वास का प्रतीक है। यह विश्वास और प्रखर तब हुआ जब भोपाल में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में यह घोषणा हुई कि 2018 में अगला विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस में आयोजित होगा तथा उसी अवसर पर सचिवालय के कार्यालय का उद्‌घाटन भी होगा। आगे उन्होंने सचिवालय की महत्वपूर्ण योजनाओं पर प्रकाश डाला तथा विशेष रूप से 'विश्व हिंदी डेटाबेस' तथा 2014 में संपन्न 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन' में प्रस्तुत आलेखों पर आधारित 'सम्मेलन स्मारिका' का परिचय दिया।

श्री अभिमन्यु अनत को सम्मान

इस साल विश्व हिंदी दिवस खास रहा क्योंकि समारोह में भारत सरकार की विदेश मंत्री एवं प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री, माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज द्वारा मॉरीशस के विख्यात तथा विश्व हिंदी साहित्य के चिरस्थायी हस्ताक्षर श्री अभिमन्यु अनत के नाम उनके हिंदी प्रेम व समर्पण के लिए एक प्रशस्ति पत्र दिया गया। यह कार्य भारतीय उच्चायोग तथा सचिवालय के माध्यम से आयोजित किया गया तथा महामहिम श्रीमती आमीना गरीब-फ़ाकिम के कर-कमलों द्वारा श्री अनत को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस 2016 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने वर्ष 2015 में "मेरे देश की हिंदी संस्था" अथवा "मेरे देश का हिंदी प्रचारक" विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया था। प्रतियोगिता को पाँच भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया था - 1. अफ़्रीका व मध्य पूर्व, 2. अमेरिका, 3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त), 4. युरोप, 5. भारत। प्रत्येक क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। समारोह में मॉरीशस के तीन

विजेताओं (प्रथम - श्री सोमदत्त काशीनाथ; संयुक्त तृतीय - श्रीमती बिद्वंती शंभु व श्रीमती लक्ष्मी जयपोल-झापेरमाल) को पुरस्कार राशि तथा प्रमाण पत्र भेंट किया गया।

लोकार्पण

विश्व हिंदी डेटाबेस

2012 में जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य के तहत विश्व हिंदी सचिवालय को सौंपे गए कार्यों के अनुरूप सचिवालय ने विश्व भर में हिंदी शिक्षण व प्रचार से संबद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षिक संस्थानों तथा हिंदी विद्वानों, लेखकों व हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबद्ध लोगों का एक डेटाबेस तैयार किया। विश्व हिंदी दिवस 2016 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने देश-विदेश की 400 हिंदी संस्थाओं व प्रचारकों से संबंधित जानकारी के साथ इस 'ऑनलाइन डेटाबेस' के प्रथम चरण का लोकार्पण किया। डेटाबेस का लिंक है http://vishwahindidb.com/।

सम्मेलन स्मारिका

वर्ष 2014 में विश्व हिंदी सचिवालय ने एक अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया था जिसमें देश-विदेश के हिंदी शिक्षक, विद्वान व संस्थाओं से जुड़े लोगों ने भाग लिया। सचिवालय ने सम्मेलन में प्रस्तुत आलेखों व अन्य दस्तावेज़ों का संकलन करके 'सम्मेलन स्मारिका' का प्रकाशन किया। इसका उद्देश्य गिरमिटिया व नव प्रवास के देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार संबंधित मौलिक जानकारी व अनुभव विश्व अकाडीमिया के समक्ष प्रस्तुत करना है।

विश्व हिंदी पत्रिका का 7वाँ अंक

इस वर्ष सचिवालय ने अपने वार्षिक प्रकाशन 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 7वें अंक के मुद्रित व वेब प्रारूपों का लोकार्पण किया। इस अंक में विभिन्न देशों से प्राप्त लगभग 42 आलेखों सहित भोपाल में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में महामहिम श्री नरेन्द्र मोदी, माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज तथा माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन द्वारा प्रस्तुत वक्तव्य व आलेख को भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। इस वर्ष की पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता यह भी रही कि यह पत्रिका 'हिंदी का इ-संसार' पर आधारित है। यह अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर भी उपलब्ध है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम का आरंभ इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, मॉरीशस के कलाकारों द्वारा हिंदी गान की एक सुन्दर व मनोरम प्रस्तुति से हुआ। हिंदी गान महामहिम डॉ. मृदुला सिन्हा, गोवा की राज्यपाल द्वारा रचित है। इस वर्ष कला व संस्कृति मंत्रालय तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आई.सी.सी.आर.) के सहयोग से बिहार, भारत से श्री रामदरश शर्मा तथा उनकी टोली को विश्व हिंदी दिवस के मंच पर प्रस्तुत किया गया। अवसर पर उनके द्वारा लोक संस्कृति पर आधारित एक विशेष संगीत प्रस्तुति हुई।

मॉरीशस की प्रमुख हिंदी संस्थाओं जैसे हिंदी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा, हिंदी संगठन, सरकारी हिंदी शिक्षक संघ आदि ने कार्यक्रम में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। अनेक मंत्री गण, मंत्रालयों के अधिकारी गण, शैक्षिक, प्रचारक व धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि व सदस्य गण, मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकार, लेखक, प्राध्यापक, शिक्षक व छात्रों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मंच संचालन डॉ. विनय गुदारी तथा डॉ. तनुजा पदारथ-बिहारी ने किया।

अन्य गतिविधियाँ

15 जनवरी, 2016 को डॉ. पीटर फ़्रीडलैंडर ने मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्रीमती आमीना गरीब-फ़ाकिम के साथ औपचारिक भेंट की। 16 जनवरी, 2016 को हिंदी प्रचारिणी सभा के सभागार में सभा के शिक्षकों, छात्रों सहित कई स्थानीय हिंदी लेखकों व साहित्यकारों तथा देश के हिंदी प्रेमियों के लिए डॉ. फ़्रीडलैंडर के सान्निध्य में एक शैक्षणिक सत्र का आयोजन किया गया। 19 जनवरी, 2016 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यं भारती सभागार में भी संस्था के शिक्षकों, छात्रों व प्राध्यापकों के लिए डॉ. फ़्रीडलैंडर के साथ एक शैक्षणिक सत्र लगा।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस 2016 : विश्व भर में

विश्व हिंदी दिवस विश्व भर में अब एक उत्सव की तरह मनाया जाने लगा है। इस उपलक्ष्य में हिंदी की गतिविधियाँ व कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ, संगोष्ठी, सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि परम्परागत रूप से आयोजित होने लगे हैं। साल-दर-साल अधिक से अधिक देश हिंदी के वैश्विक प्रचार के उद्देश्य से विश्व हिंदी दिवस मनाने लगे हैं। इस वर्ष भारत, मॉरीशस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, जमैका, रूस, अफ़्रीका, नेपाल आदि अन्य कई देशों में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कई गतिविधियाँ आयोजित हुईं।

अस्ताना, कज़ाकिस्तान

29 जनवरी, 2016 को अलमाती के महात्मा गांधी स्कूल में अस्ताना, कज़ाकिस्तान के राजदूतावास द्वारा भारतीय शास्त्रीय नृत्य केंद्र के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। राजदूत श्री हर्ष के. जैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि ***"हिंदी 400 करोड़ लोगों की मातृभाषा है तथा भारत के अलावा वह अन्य कई देशों में बोली और समझी जाती है।"*** उन्होंने अल फ़राबी कज़ाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय तथा अलमाती के भारतीय शास्त्रीय नृत्य केंद्र में हिंदी की पढ़ाई होने तथा कज़ाकिस्तान के कई विद्यार्थियों का केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी की पढ़ाई करने पर खुशी व्यक्त की। समारोह में हिंदी भाषा के इतिहास पर एक प्रस्तुति हुई तथा कविता पाठ भी किया गया। महात्मा गांधी स्कूल, भारतीय शास्त्रीय नृत्य केंद्र, अल फ़राबी कज़ाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों व कर्मचारियों तथा ओरिएंटल स्टडीज़ के विद्वानों आदि ने समारोह में भाग लिया।

साभार : भारतीय राजदूतावास, अस्ताना, कज़ाकिस्तान का वेबसाइट

फ़्रांस

8 जनवरी, 2016 को इनाल्को, पेरिस में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री मनीष प्रभात उपस्थित थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने पर बल दिया। अवसर पर एक इंटरैक्टिव सत्र का आयोजन भी किया गया जिसके अंतर्गत छात्रों ने हिंदी सीखने की प्रेरणा तथा अपने अनुभवों को याद किया और उसपर चर्चा की। कार्यक्रम में हिंदी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

साभार : इंडियन डायस्पोरा क्लब

जमैका

10 जनवरी को किंग्स्टन, जमैका में भारतीय उच्चायोग में विश्व हिंदी दिवस

का आयोजन किया गया। अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री प्रताप सिंघ ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में विश्व भर में हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए सभी लोगों को अपना योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया। अवसर पर हिंदी में नृत्य, गीत, कविता पाठ एवं लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस वर्ष की विशेषता यह रही कि गिरमिटिया मज़दूरों की तीसरी एवं चौथी पीढ़ी के वंशजों ने उत्साह के साथ भाग लिया। शांटेल एवं रशेल बियर्स बहनों द्वारा शास्त्रीय वन्दना प्रस्तुति हुई। गिरमिटिया मज़दूरों के वंशजों की धार्मिक संस्था 'प्रेमा सत्संघ ऑव जमैका' के युवा ग्रुप ने ईश गीत प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों द्वारा हिंदी फिल्मों की लड़ियों ने हास्यपुट जोड़ दिया और हिंदी के 5-6 वर्षीय बाल कवियों ने शुद्ध हिंदी उच्चारण में (बाल पोथी की) हिंदी कविताएँ सुनाईं। भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री प्रताप सिंघ ने भी अपनी कुछ कविताएँ सुनाईं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सीताराम पोद्दार ने किया व त्रुड़ी गोशाईं ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. सीताराम पोद्दार की रिपोर्ट

काठमांडू

10 जनवरी, 2016 को अन्नपूर्णा होटल के दरबार मार्ग में भारतीय राजदूतावास द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। अवसर पर पूर्व प्रधान मंत्री डॉ. लोकेंद्र बहादुर चाँद, त्रिभुवन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की डॉ. श्वेता दिप्ती तथा नेपाल व भारत के प्रख्यात विद्वानों आदि ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। भारतीय राजदूतावास के प्रतिनिधि श्री विनय कुमार ने हिंदी के महत्व पर बल देते हुए कहा कि ***"हिंदी ने यूरोपीय देशों में लोकप्रियता प्राप्त की है। अतः उसे संचार का माध्यम बनाना चाहिए न कि राजनीति का।"*** डॉ. चाँद ने सभी भाषाओं को एक नज़रिए से देखने के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। समारोह में डॉ. मोहन चंद्र ने 'सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी' पर एक प्रस्तुति दी तथा नेपाली और भारतीय कवियों ने कविता पाठ किया।

साभार : द हिमालयन टाइम्स

मास्को

20 जनवरी, 2016 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में मास्को के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के दुर्गा प्रसाद धर सभागार में एक भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामहिम कार्यकारी राजदूत श्री जी. बाला सुब्रमणियम् थे। केंद्र के निदेशक श्री आशीष शर्मा ने भारत के प्रधानमंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया। अवसर पर कविताएँ, कहानियाँ व लघु-कथाएँ प्रस्तुत की गईं। महामहिम श्री जी. बाला सुब्रमणियम् ने अवसर पर समस्त प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए। कार्यक्रम में भारतीय राजदूतावास के कर्मचारी, अधिकारीगण व लगभग 100 रूसी हिंदी प्रेमी उपस्थित थे।

साभार : भारतीय राजदूतावास, मास्को, रूस का वेबसाइट

दक्षिण अफ़्रीका

16 जनवरी, 2016 को क्वाज़ूलू-नताल, दक्षिण अफ़्रीका के हिंदी शिक्षा संघ द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि डरबन में भारत के महावाणिज्यदूत श्री आर. रघुनाथन रहे। उन्होंने अपने संबोधन में हिंदी शिक्षा संघ का धन्यवाद किया तथा प्रो. उषा शुक्ला को हिंदी भाषा के प्रति योगदान हेतु साधुवाद दिया। कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमती माला रामबली तथा प्रो. उषा शुक्ला ने हिंदी और विश्व हिंदी दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई तथा कविता पाठ भी हुआ। धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती देविका मदारी ने किया।

साभार : हिंदी खबर-दक्षिण अफ़्रीका, अंक जनवरी 2016

त्रिनिदाद एवं टोबैगो

8 जनवरी, 2016 को महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान के सभागार में भारतीय उच्चायोग, त्रिनिदाद एवं टोबैगो द्वारा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. रामप्रसाद परसराम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार में उच्चायोग के प्रयासों की सराहना करते हुए उपस्थित अतिथियों को हिंदी सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री गौरीशंकर गुप्ता ने भारत के प्रधानमंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी द्वारा जारी संदेश को पढ़ा तथा 'शिक्षा, शिक्षक और भारतीय सभ्यता और संस्कृति' पर वक्तव्य दिया। उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी पठन-पाठन में प्रौद्योगिकी के प्रयोग का आह्वान किया। इसके अतिरिक्त उच्चायोग के द्वितीय सचिव ने सभी का स्वागत करते हुए विश्व हिंदी दिवस के औचित्य एवं कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। समारोह में विद्यार्थियों द्वारा कविता पठन, भजन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन सुश्री कमला बुदरी ने किया तथा डॉ. दीपक पांडेय ने आभार व्यक्त किया।

साभार: भारतीय उच्चायोग, त्रिनिदाद एवं टोबैगो का वेबसाइट

वाशिंग्टन, अमेरिका

15 जनवरी, 2016 को भारतीय राजदूतावास, वाशिंग्टन, अमेरिका में विश्व हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुश्री नंदा द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ। वाशिंग्टन में भारत के राजदूत, महामहिम श्री अरुण के. सिंह ने भारत के प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा तथा विश्व हिंदी दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। साथ-साथ श्री भरत भार्गव ने हिंदी शिक्षण पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा श्री एन. के. मिश्रा ने विश्व हिंदी दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। समारोह में अनेक कवियों द्वारा कविता पाठ हुआ। समारोह का संचालन सुश्री आस्था वर्मा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सतीश मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में अनेक हिंदी प्रेमियों ने अपनी उपस्थिति दी।

साभार : भारतीय दूतावास, वाशिंग्टन, अमेरिका का वेबसाइट

विश्व हिंदी दिवस 2016 : भारत

मुंबई

11 जनवरी, 2016 को बैंक ऑव बड़ौदा के कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के महाप्रबंधक श्री रवि कुमार अरोड़ा ने की। समारोह में उप्सला विश्वविद्यालय,

स्वीडन के प्रो. हाइंस वर्नर वेसलर, कोलंबिया विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. की रचनाकार सुश्री सुषम बेदी तथा यू.के. हिंदी समिति, लंदन की लेखिका श्रीमती उषा राजे सक्सेना विशेष रूप से उपस्थित रहे। अपने उद्‌बोधन में तीनों वक्ताओं ने अपने-अपने देश में हिंदी की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की संभावनाओं को रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), डॉ. जवाहर कर्नावट ने तथा धन्यवाद ज्ञापन संजय सिंह, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने किया। कार्यक्रम में कॉर्पोरेट कार्यालय के उच्च कार्यपालक गण, अधिकारी व कर्मचारी भारी संख्या में उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष भी मॉरीशस सहित 25 देशों में स्थित बैंक के विदेशी कार्यालयों/शाखाओं में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जो बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा बैंकिंग क्षेत्र में किया गया अभिनव प्रयास है।

श्री चन्द्रशेखर चौरसिया की रिपोर्ट

हैदराबाद

11 जनवरी, 2016 को हैदराबाद के भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, हवाई अड्डा, हैदराबाद में अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। अवसर पर महाप्रबंधक (समन्वय प्रभारी) आर. के. सिंह ने कहा कि ***"हिंदी भारत की समृद्ध भाषा होने के साथ-साथ देश की संस्कृति और सभ्यता की प्रतीक है। हिंदी में कार्य करना न केवल संवैधानिक दायित्व है, बल्कि वह राष्ट्रसेवा है।"*** इस अवसर पर महाप्रबंधक (संचार), जी. एस. राव ने सभी को अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने बताया कि हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करने हेतु समस्त अधिकारियों को आगे आना चाहिए ताकि सभी कर्मचारी उनसे प्रेरित हो सकें। कार्यक्रम के अंतर्गत राजभाषा अनुभाग द्वारा 'हिंदी भारत भाल की बिंदी' (सौजन्य दूरदर्शन) लघु वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर राजभाषा अनुभाग से संबंधित वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। नोडल अधिकारी (राजभाषा), सुरेंद्र कुमार जीवातोडे ने विश्व हिंदी दिवस के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि हैदराबाद हवाई अड्डे पर राजभाषा कार्यशाला, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक तथा हिंदी पखवाड़े का नियमित आयोजन किया जाता है। पर्यवेक्षक राजभाषा, उपेंद्र कुमार शुक्ला ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साभार : इ-पेपर स्वतंत्र वार्ता.कॉम

वर्धा

10 जनवरी, 2016 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के हबीब तनवीर सभागार में भारतीय रिज़र्व बैंक तथा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता, डॉ. कृपा शंकर चौबे मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर चर्चा की। इसके अतिरिक्त रिज़र्व बैंक की क्षेत्रीय निदेशक जुथिका जीबानी ने सभी बैंकों से अनुरोध किया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें। समारोह में रिज़र्व बैंक द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कारों का वितरण अतिथियों द्वारा किया गया। समारोह में राष्ट्रीयकृत बैंकों के प्रतिनिधि, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन बैंक के सहायक प्रबंधक डॉ. निधि ने तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक महा प्रबंधक बी. एन. मेश्राम ने किया।

श्री बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के आधिकारिक कार्यारंभ की 8वीं वर्षगाँठ

विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने आधिकारिक कार्यारंभ की 8वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में 15 फरवरी, 2016 को मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में महात्मा गांधी संस्थान मोका के सभागार में एक समारोह का आयोजन किया।

अवसर पर मॉरीशस की शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं तथा भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल, महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल, संस्थान के अध्यक्ष श्री जयनारायण मीतू व अन्य गणमान्य अतिथियों ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस वर्ष केरल, भारत से हिंदी प्रोफ़ेसर, डॉ. विजयकुमारन सी. पी.वी. को बीज वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था।

विश्व हिंदी सचिवालय ने 11 फरवरी, 2008 को आधिकारिक रूप से कार्यारंभ किया था। सचिवालय भारत सरकार व मॉरीशस सरकार की द्विपक्षीय संस्था है जिसकी स्थापना से संबंधित अधिनियम मॉरीशस नेशनल असेंबली में नवंबर, 2002 में पारित किया गया और उसकी आधिकारिक घोषणा सितंबर, 2005 में की गई।

2008 से प्रतिवर्ष 11 फरवरी को सचिवालय अपने आधिकारिक कार्यारंभ की वर्षगाँठ मनाता है। इस अवसर पर सचिवालय भारत से किन्हीं हिंदी शिक्षक, शोधकर्ता, सृजनकर्मी को वक्तव्य तथा अन्य अकादमिक व साहित्यिक गतिविधियों के लिए आमंत्रित करता है।

माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने अवसर पर सभागार को संबोधित करते हुए सचिवालय के कार्यों की सराहना की तथा भावी योजनाओं के लिए प्रोत्साहित भी किया। माननीया मंत्री जी ने अपने वक्तव्य में विशेष रूप से युवाओं को संबोधित तथा प्रोत्साहित करते हुए कहा कि ***"हिंदी को लेकर अपने भविष्य, अपने करियर के बारे में सोचते हुए आपको शिक्षक, अनाउन्सर, पत्रकार के साथ-साथ शोधकर्ता, अनुवादक, दुभाषिए, प्रबंधक, डिप्लोमैट जैसे विकल्प भी देखने होंगे। आपके काम की जगह एक स्कूल, युनिवर्सिटी या रेडियो स्टेशन के साथ-साथ एक उच्चायोग और मल्टीनेशनल फ़र्म या संयुक्त राष्ट्रसंघ का दफ़्तर भी हो सकता है।'लेकिन इसके लिए आपको भाषा के साथ-साथ आज के जॉब मार्केट के हिसाब से मल्टिपल प्रोफ़ेशनल स्किल्स का विकास करना होगा।"***

सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ की वर्षगाँठ के सुनहरे अवसर पर माननीया मंत्री जी ने यह शुभ सूचना भी दी कि फ़ेनिक्स, मॉरीशस में सचिवालय के मुख्यालय के निर्माण के लिए पर्मिट मिल गया है। शीघ्र ही सचिवालय के नए भवन का सपना साकार होनेवाला है।

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल ने सभागार को संबोधित करते हुए मॉरीशस में ही विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना को सार्थक माना। उनके शब्दों में ***"भारत के बाहर अगर कोई भी ऐसा देश है जहाँ पर हिंदी से उतना ही प्रेम करनेवाले लोग हैं तो वो मॉरीशस है। मॉरीशस की अपनी एक हिंदी है, मॉरीशस के अपने साहित्यकार, विद्वान, लेखक हैं। कुछ तो विश्व स्तर पर जाने जाते हैं और उनकी किताबें भारत के विश्वविद्यालयों में भी पढ़ाई जाती हैं।"***

महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका, डॉ. विद्योत्मा कुंजल ने भी अपने वक्तव्य में विश्व हिंदी सचिवालय को बधाई व शुभकामनाएँ दीं।

प्रो. विजयकुमारन सी.पी.वी. ने समारोह के अंतर्गत "दक्षिण भारत में हिंदी की विकास यात्रा" विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। वक्तव्य से पूर्व भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा) डॉ. श्रीमती नूतन पाण्डेय ने प्रो.

विजयकुमारन सी.पी.वी. का परिचय दिया।

कार्यक्रम के आरंभ में सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने अतिथियों का स्वागत किया।

श्री हीरालाल लीलाधर व श्रीमती कल्पना लालजी की पुस्तकों का लोकार्पण

समारोह में मॉरीशस के लब्धप्रतिष्ठ हिंदी रचनाकार श्री हीरालाल लीलाधर कृत 'एहसास', 'मेरे अपने' व 'व्याकरण विमर्श' तथा श्रीमती कल्पना लालजी कृत 'आईना ज़िंदगी का' पुस्तकों का लोकार्पण माननीया मंत्री जी के हाथों किया गया। लोकार्पण से पूर्व महात्मा गांधी संस्थान की हिंदी विभागाध्यक्षा, डॉ. संयुक्ता भुवन-रामसारा ने पुस्तकों तथा लेखकों का परिचय प्रस्तुत किया।

अवसर पर मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार, लेखक गण, हिंदी प्रचारक व शैक्षिक संस्थाओं के प्रतिनिधि गण व सदस्य गण, हिंदी प्राध्यापक, शिक्षक, छात्र तथा अकादमिक आदि उपस्थित थे। मंच संचालन सुश्री अंजलि चिंतामणि ने किया।

अन्य गतिविधियाँ

मुख्य कार्यक्रम के अतिरिक्त प्रो. विजयकुमारन ने सचिवालय के तत्वावधान में देश की अन्य हिंदी शिक्षण व प्रचारक संस्थाओं के सौजन्य से आयोजित अनेक गतिविधियों में भाग लिया। 15 फ़रवरी को महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा प्रो. विजयकुमारन के सान्निध्य में संस्थान के तृतीयक छात्रों व प्राध्यापकों के लिए 'तुलनात्मक साहित्य' पर एक परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया। 13 फ़रवरी को हिंदी प्रचारिणी सभा के अधिकारियों, सदस्यों व शिक्षकों के साथ प्रो. विजयकुमारन की एक औपचारिक भेंट हुई तथा ऋषि दयानंद संस्थान के तृतीयक छात्रों के लिए प्रो. विजयकुमारन द्वारा 'भक्ति साहित्य' पर एक वक्तव्य हुआ।

इनके अतिरिक्त प्रो. विजयकुमारन ने अपनी मॉरीशस यात्रा के अंतर्गत हिंदी स्पीकिंग यूनियन के 'ज्ञान सरोवर' रेडियो कार्यक्रम में भाग लिया तथा मॉरीशस ब्रोडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के 'सृजन' टी.वी. कार्यक्रम के माध्यम से भी हिंदी, लोक साहित्य आदि अनेक विषयों पर मॉरीशस की जनता के साथ अपना ज्ञान बाँटा।

फ़िजी में राष्ट्रीय स्तर की 'हिंदी परिषद' का गठन

16 जनवरी, 2016 को भारतीय मूल के फ़िजी निवासियों को सम्मिलित करनेवाली सभी संस्थाओं, फिजी के तीन विश्वविद्यालयों, शिक्षा मंत्रालय व भारतीय उच्चायोग ने समन्वय स्थापित करते हुए राष्ट्रीय स्तर की 'हिंदी परिषद' का औपचारिक रूप से गठन किया। यह पहल हिंदी की सक्रिय संस्थाओं के अभाव को दूर करने के उद्देश्य से की गई।

परिषद का गठन हाल ही में फिजी के आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्यालय में एक अत्यंत महत्वपूर्ण बैठक के दौरान किया गया। फिजी में आर्य समाज के सबसे वरिष्ठ नेता और फिजी सरकार में भारतीय मामलों के सचिव रह चुके श्री भुवन दत्त इसके अध्यक्ष और भारतीय मूल के लोगों की बड़ी धार्मिक संस्था सनातन धर्म के सचिव और रेडियो अनाउंसर, श्री वीरेन्द्र इस संस्था के सचिव निर्वाचित हुए।

परिषद का निर्वाचन शिक्षा मंत्रालय के श्री रमेश चंद द्वारा करवाया गया। बा शहर से पधारे वरिष्ठ हिंदी सेवी श्री आनंदी भाई, फिजी सेवाश्रम संघ, युवा के संयोजक श्री अखिलेश, मीडिया व्यक्तित्व और ई-ताऊकेई समाज के श्री नेमानी जो प्रसिद्ध टेलिविज़न एंकर भी हैं इसके उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। सह-सचिव के रूप में हिंदी लेखक संघ, फिजी के श्री जैनेन प्रसाद, शिक्षा मंत्रालय की श्रीमती श्यामला, फिजी नेशनल युनिवर्सिटी में प्राध्यापिका श्रीमती सुभाषिनी निर्वाचित हुईं। गुजराती समाज की जानी-मानी हस्ती श्री मनहर नारसी व विरखू भाई कोषाध्यक्ष व सह-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। पुस्तकालय अधिकारी के पद पर श्रीमती रोहिणी (शिक्षा मंत्रालय) को निर्वाचित किया गया। युनिवर्सिटी ऑव साउथ पैसिफ़िक की श्रीमती इंदु चंद्रा, 'संगम' के श्री सदाशिव नायकर, शिक्षा मंत्रालय के श्री रमेश चंद, फिजी नेशनल युनिवर्सिटी की श्रीमती विद्या सिंह व मास्टर नरेश, यूनिवरसिटी ऑव फिजी की श्रीमती सुकेश बली व श्री रीगेन्द्र लाल, वरिष्ठ हिंदी सेवी श्रीमती भिंडी, श्रीमती मनीषा रामरखा, हिंदी सेवी किरण माला सिंह, श्री अजय सिंह, श्रीमती सरिता चंद, पंडित विज्ञान शर्मा, बा शहर के प्रसिद्ध कवि श्री युसुफ़, लंबासा की हिंदी लेखिका श्रीमती प्रवीणा को समिति के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया। फ़िजी में पहली बार किसी हिंदी संस्था में इस प्रकार के उत्तरदायित्व वाले पद पर ई-ताऊकेई समाज और मुस्लिम समाज का भी प्रतिनिधित्व है।

विश्व भर के हिंदी प्रेमियों ने फिजी को इस सराहनीय कदम के लिए शुभकामनाएँ दीं। फिजी में हिंदी के प्रचार-प्रसार व परिषद के गठन के लिए फिजी उच्चायुक्त के अनिल शर्मा, सांस्कृतिक सचिव (द्वितीय) का विशेष योगदान रहा। परिषद को भारतीय उच्चायोग का सहयोग प्राप्त है। देश में हिंदी की राष्ट्रीय संस्था खड़ा करने के प्रयास पूर्व में भारतीय उच्चायुक्त प्रभाकर झा व विनोद कुमार ने 2008 व 2011 में किए थे। यह प्रयास उसी कड़ी को आगे बढ़ाने का क्रम है।

साभार : हिंदीमीडिया.इन

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

12-14 मार्च, 2016 को बृहस्पति भवन, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में हिंदी विभाग द्वारा त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय 'साहित्येतर हिंदी लेखन एवं सूचना प्रौद्योगिकी' था। संगोष्ठी को विभिन्न सत्रों में बाँटा गया था।

उद्घाटन सत्र में प्रो. नवीन चंद्र लोहनी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग ने सभी वक्ताओं, अतिथियों एवं महाविद्यालयों से आए शिक्षकों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा, पीठिका और तीन दिन में विभिन्न सत्रों में होनेवाले विमर्शों की आधारशिला रखी। उन्होंने कहा कि "आज हिंदी अपनी चौहद्दी को लांघकर उन्मुक्त आकाश में विचरण कर रही है। तकनीक ने हिंदी को नई ताकत दी है।"

विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ टैक्नोलॉजिस्ट, प्रो. ओम विकास ने अपने वक्तव्य में कहा "साहित्येतर हिंदी का विकास मात्र संगोष्ठी या कार्यशालाओं के आयोजन करने से नहीं होगा अपितु हमें अकादमिक जगत से बाहर आकर व्यावहारिक धरातल पर सोचने की आवश्यकता है।"

प्रो. एच. एस. सिंह, प्रति कुलपति, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि "हिंदी हमारी पहचान है, हिंदी हमारी अस्मिता है किंतु आज जिस तेज़ी से भाषाएँ मर रही हैं, हमें हिंदी में मूल्यपरक साहित्य का सर्जन करना होगा साथ ही हिंदी को विज्ञान चिकित्सा और टैक्नोलॉजी के विकास के लिए तैयार करना होगा।"

त्रिदिवसीय संगोष्ठी के अंतर्गत 'समाज विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी', 'विज्ञान, हिंदी एवं सूचना प्रौद्योगिकी', 'विधि, हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी', 'अनुवाद, मीडिया, हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी', 'रेलवे, बैंक, सरकारी कार्यालयों में हिंदी प्रयोग एवं सूचना प्रौद्योगिकी' व 'साहित्येतर हिंदी लेखन में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका' विषयों पर विभिन्न सत्र चले जिनमें अनेक विद्वानों ने पत्र प्रस्तुत किए।

समापन सत्र में प्रो. प्रमोद कुमार शर्मा, श्रीमती जय वर्मा, डॉ. सविता मोहन व प्रो. गंगा प्रसाद विमल ने अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति प्रो. एन. के. तनेजा ने कहा कि "संगोष्ठी का विषय बहुत ही समसामयिक और महत्वपूर्ण है। विश्व में वे ही देश शोध, शिक्षा, तकनीक और आर्थिक क्षेत्र में तेज़ी से विकास कर सकेंगे जिनकी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है।"

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', प्रो. सत्यकाम, प्रो. आलोक कुमार, डॉ. शिवा कनौजिया शुक्ला, डॉ. आलोक पुराणिक, प्रो. रामशरण जोशी, डॉ. देवेंद्र मेवाड़ी, प्रो. ए. के. अरुण, डॉ. दिनेश चमोला, श्री मानवर्धन कंठ, श्री सुभाष चंदर, प्रो. वाई. विमला, प्रो. हेमंत जोशी, श्री एस. पी. त्यागी, श्री नरेंद्र पाल सिंह, श्री सत्यप्रकाश, श्रीमती संतोष खन्ना, श्री बृजेश चौधरी, डॉ. आलोक पौराणिक, डॉ. सूर्यकांत द्विवेदी, प्रो. गोविंद सिंह, सुश्री मंजरी जोशी, प्रो. हेमंत जोशी, डॉ. लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, श्री अशोक गौड़, श्री मुकेश कपूर, डॉ. कुसुमवीर, डॉ. वी. के. मल्होत्रा, डॉ. धनजी प्रसाद, श्री बालेंदु दाधीच, श्री पंकज बिष्ट, प्रो. प्रमोद कुमार शर्मा, श्रीमती जय वर्मा, डॉ. सविता मोहन, प्रो. गंगा प्रसाद विमल, प्रो. एन. के. तनेजा आदि विद्वानों ने संगोष्ठी में भाग लिया। अवसर पर विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विभिन्न संस्थाओं से आए शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित थे। अंत में आयोजन सचिव डॉ. अंजू ने आभार व्यक्त किया।

श्री बालेंदु शर्मा दाधीच की रिपोर्ट

प्रो. च्यांग चिंगख्वै को साहित्य अकादमी की 'डॉ. आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता'

27 जनवरी, 2016 को पीकिंग विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई विभाग के प्रोफ़ेसर व दक्षिण एशियाई केंद्र के निदेशकडॉ. च्यांग चिंगख्वै को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 'डॉ. आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता' प्रदान की गई। इससे पूर्व अंतरराष्ट्रीय विवेकानंद केंद्र, दिल्ली में प्रो. च्यांग द्वारा मध्यकालीन हिंदी कवि सूरदास की अमर कृति 'सूरसागर' के चीनी भाषांतर का लोकार्पण हुआ। आपने मध्यकाल की इस प्रतिनिधि कृति का चीनी में गद्य-पद्यमय अनुवाद किया है।

अपनी भारत यात्रा के अन्तर्गत प्रो. च्यांग ने 29 जनवरी, 2016 को हिंदी विभाग, हिंदू कॉलेज, दिल्ली के हिंदी साहित्य सभा द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रम में 'वैश्विक हिंदी का परिदृश्य : संदर्भ चीन' विषय पर व्याख्यान में अपनी इस कृति के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि चीन के सम्मुख कृष्ण के भगवान रूप को रखना उनका लक्ष्य नहीं रहा बल्कि इस अनुवाद का उद्देश्य 'सूरसागर' में उपस्थित 'यूनिवर्सल वैल्यू' को चीनी भाषी पाठकों के समक्ष उजागर करना है। उनके अनुसार इन मूल्यों से ही भारत की असली पहचान बनती है और उस पहचान की वास्तविक समझ हासिल करने के लिए हिंदी भाषा और उसके साहित्य का सेतु बाँधना अनिवार्य है। उनके शब्दों में''जब तक हम हिंदी नहीं जानते, हम भारत को नहीं समझ सकते। अंग्रेज़ी से भारत को नहीं समझा जा सकता। इंडिया और भारत के बीच बहुत बड़ा अंतर है। विश्व में हिंदी के विकास में प्रवासी भारतीयों और हिंदी फ़िल्म जगत का बहुत बड़ा योगदान है।" अंततः भारत-चीन संबंधों पर मुखर भाव से अपना मत रखते हुए उनकी यह टिप्पणी ध्यान देने योग्य रही: ''मैं दीवार नहीं पुल बनाना चाहता हूँ!" कार्यक्रम के आरंभ में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. अनिल राय ने प्रो. च्यांग का विस्तृत परिचय दिया तथा समापन में प्रो. च्यांग ने छात्रों द्वारा सम्मुख रखी गई जिज्ञासाओं का समुचित उत्तर भी दिया।

विजया सती की रिपोर्ट

सुपरिचित कथाकार नीरजा पांडेय का कहानी पाठ

2 फरवरी, 2016 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के नागार्जुन सराय में वर्धा संस्कार प्रकोष्ठ द्वारा सुपरिचित कथाकार नीरजा पांडेय के कहानी पाठ का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष और समालोचक प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने की तथा मुख्य अतिथि आवासीय लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्गल रहीं। कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमती नीरजा पांडेय ने अपनी एक कहानी 'सुबह दस बजे' और तीन कविताओं का पाठ किया। श्रीमती चित्रा मुद्गल ने श्रीमती नीरजा पांडेय की कहानी को समाज में पनप रही संवेदनहीनता को बयाँ करने वाली रचना बताया तथा कहा कि नीरजा पांडेय भविष्य में कथा साहित्य में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराएँगीं। इस अवसर पर कथाकार मनोज कुमार पांडेय, 'ताना-बाना' के संपादक राकेश श्रीमाल, 'बहुवचन' के संपादक अशोक मिश्र, कवयित्री हरप्रीत कौर, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपाशंकर चौबे, सुश्री सुरभि विप्लव, बी. एस. मिरगे, अश्विनी सहित छात्रगण व अनेक साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री रेणु कुमारी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. राकेश मिश्र ने किया।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद के नए सदस्य

विश्व हिंदी सचिवालय भारत सरकार व मॉरीशस सरकार की द्विपक्षीय संस्था है। विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम 2002 के अनुरूप मॉरीशस सरकार व भारत सरकार द्वारा हिंदी के क्षेत्र में ख्याति-प्राप्त दो विद्वान सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य मनोनीत होते हैं। इस वर्ष मॉरीशस सरकार द्वारा मॉरीशसीय पक्ष की ओर से श्री सत्यदेव टेंगर के साथ डॉ. उदय नारायण गंगू को मनोनीत किया गया है तथा भारतीय पक्ष की ओर से प्रो. सत्यव्रत शास्त्री व प्रो. नरेंद्र कोहली सचिवालय की शासी परिषद के नए सदस्य मनोनीत हुए हैं।

डॉ. उदय नारायण गंगू

डॉ. उदय नारायण गंगू ने भारत के जीवाजी विश्वविद्यालय से पीएचडी, हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय से एम.ए., बी.ए. तथा विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। आप महात्मा गांधी संस्थान में शिक्षाधिकारी, हिंदी व्याख्याता, वरिष्ठ व्याख्याता तथा हिंदी अध्यापक रह चुके हैं। अभी आप ऋषि दयानंद इंस्टिट्यूट के डीन, आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान, 'आर्योदय' पत्र के मुख्य संपादक तथा आर्य समाज के विद्यालयों में प्रवेशिका, परिचय, प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, एस.सी., एच.एस. सी. विद्या विनोद, विद्या रत्न, विद्या विशारद, विद्यावाचस्पति, सिद्धांत भास्कर, सिद्धांत शास्त्री, सिद्धांत वाचस्पति और बी.ए. तथा एम.ए. के शिक्षण कार्य से जुड़े हुए हैं।

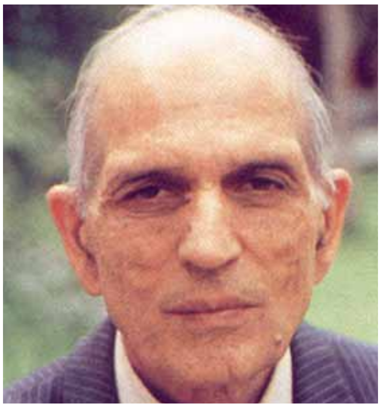

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री संस्कृत भाषा के विद्वान तथा प्रसिद्ध रचनाकार हैं। आपने डिलिट, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से पीएचडी, पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. तथा बी.ए. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। दिल्ली विश्वविद्यालय में 40 वर्षों तक शिक्षण कार्य करने के साथ-साथ संस्कृत विभाग के अध्यक्ष तथा कला संकाय के डीन, ओड़िशा के श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति तथा कई विश्वविद्यालयों में अतिथि प्राध्यापक रह चुके हैं। आप 38 राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किए जा चुके हैं।

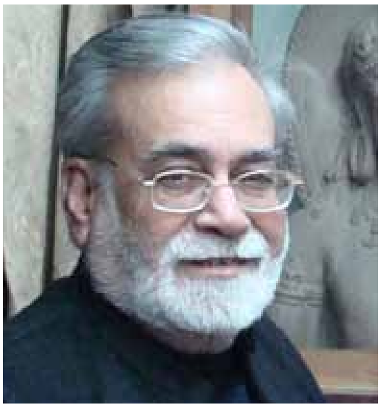

प्रो. नरेंद्र कोहली

डॉ. नरेंद्र कोहली आधुनिक हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार माने जाते हैं। आपने पीएचडी, दिल्ली विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. तथा राँची विश्वविद्यालय से हिंदी में बी.ए. किया। आपने उपन्यास, कहानी, व्यंग्य, नाटक, निबंध, आलोचना, संस्मरण आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलाई तथा एक राष्ट्रवादी साहित्यकार के रूप में सौ से भी अधिक उच्च कोटि के ग्रंथों का सृजन किया है। आपको कई सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से शासी परिषद के नए सदस्यों का हार्दिक स्वागत है।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा साहित्य संवाद की गोष्ठी

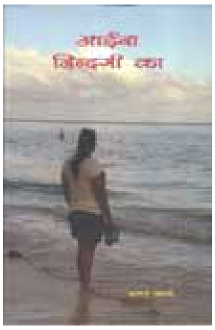

26 फरवरी, 2016 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा साहित्य संवाद की गोष्ठी के अंतर्गत मॉरीशसीय हिंदी लेखिका व कवयित्री श्रीमती कल्पाना लालजी की पुस्तक 'आईना ज़िंदगी का' पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। 'आईना ज़िंदगी का' श्रीमती लालजी द्वारा प्रकाशित नया काव्य संकलन है जिसका लोकार्पण 15 फरवरी, 2016 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के आधिकारिक कार्यारंभ की 8वीं वर्षगाँठ समारोह के अंतर्गत किया गया था। परिचर्चा में डॉ. श्रीमती नूतन पांडेय व श्री यंतुदेव बुधु द्वारा पुस्तक पर विस्तृत मूल्यांकन हुआ तथा गोष्ठी में उपस्थित सुश्री अंजलि चिंतामणी, डॉ. सरिता बुधु, श्रीमती संध्या नवोसा, श्रीमती सीता रामयाद, श्रीमती शिक्षा गजाधर और गुलशन सुखलाल आदि की टिप्पणियाँ हुईं। सत्र का संचालन साहित्य संवाद की संयोजिका श्रीमती अंजु घरभरन ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

राष्ट्रीय बाल साहित्य सम्मान समारोह

2 मार्च, 2016 को 'साहित्य मंडल' प्रेक्षा गृह, श्री नाथद्वारा में 'राजकुमार जैन राजन फाउंदेशन' आकोला द्वारा '11वां बाल साहित्य सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ राष्ट्रीय बाल कवि सम्मेलन से हुआ। इस अवसर पर पवित्रा अग्रवाल को 'राष्ट्रकवि पं. सोहन लाल द्विवेदी बाल साहित्य सम्मान', श्री कृष्ण कुमार अस्थाना को 'डॉ. राष्ट्रबंधु वरिष्ठ बाल साहित्यकार सम्मान', डॉ. अरशद खान को 'डॉ. श्री प्रसाद स्मृति युवा बाल साहित्यकार सम्मान', श्री पवन पहाड़िया को 'चंद्रसिंह बिरकाली राजस्थानी बाल साहित्यकार सम्मान', डॉ. प्रीति प्रवीण खरे को 'श्रीमती इंदिरा देवी हिंगर बाल साहित्य सम्मान', श्री महावीर रावांल्टा को 'अम्बालाल हिंगड स्मृति बाल साहित्य सम्मान', श्री प्रणय खरे एवं कु. दिव्या जैन को 'राष्ट्रीय बाल गौरव सम्मान', श्री महेश मनोरिया मिलन को 'बाल साहित्य प्रसार सम्मान', श्री गोविंद भारद्वाज अजमेर, श्री धरम चंद मेहता, श्री नाथद्वारा, डॉ. चेतना उपाध्याय, डॉ. मोहम्मद साजिद खान एवं श्रीमती कमलेश चौधरी को स्मृति सम्मानों से विभूषित किया गया।

इस अवसर पर सुपरिचित बाल साहित्यकार राजकुमार जैन राजन के संपादन में प्रकाशित 'साहित्य समीर दस्तक (भोपाल), राष्ट्र समर्पण (नीमच), सार समीक्षा (भोपाल) एवं सहित्याञ्चल (भीलवाड़ा)' के बाल विशेषांक, कीर्ति श्रीवास्तव के बाल कविता संग्रह 'मेहनत का फल होता मीठा', श्री गोविद शर्मा के बाल हास्य कहानी संग्रह 'बंदर की करतूत' एवं श्री मोतीलाल गौड़ विमल के बाल कविता संग्रह 'बगिया के फूल' का भी लोकार्पण हुआ। समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से पधारे शब्द साधक उपस्थित थे। संचालन प्रसिद्ध कवि श्री विट्ठल पारीक ने किया।

साभार : फतह नगर न्यूज़.कॉम

'आधुनिक शिक्षण विधियों में क्रांतिकारी परिवर्तन' पर श्री प्रेमपाल शर्मा का वक्तव्य

पिछले दिनों भारत के प्रसिद्ध हिंदी लेखक, कहानीकार, उपन्यासकार, कवि, व्यंगकार, अनुवादक तथा वरिष्ठ रेलवे अधिकारी व 'अजगर करे न चाकरी' उपन्यास के लिए विशेष लोकप्रिय, श्री प्रेमपाल शर्मा ने मॉरीशस की यात्रा की। इसके अंतर्गत उन्होंने कई साहित्यिक और विचारात्मक गतिविधियों में भाग लिया। उनका प्रमुख कार्यक्रम 16 मार्च, 2016 को महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस में आयोजित एक वक्तव्य रहा। यह आयोजन महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी प्राध्यापकों एवं छात्रों के लिए किया गया था। वक्तव्य 'आधुनिक शिक्षण विधियों में क्रांतिकारी परिवर्तन' विषय पर आधारित था। अवसर पर संस्थान की महानिदेशिका, श्रीमती सूर्यकांति गयान जी.ओ.एस.के., निदेशिका, डॉ. श्रीमती विद्योत्मा कुंजल, हिंदी विभागाध्यक्षा व एसोसिएट प्रोफ़ेसर, डॉ. श्रीमती संयुक्ता भुवन-रामसारा तथा उपस्थित विशेष अतिथियों ने श्री प्रेमपाल शर्मा जी का स्वागत किया तथा अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। श्री प्रेमपाल शर्मा ने अपने अनुभवों का उल्लेख करते हुए यह बताया कि साहित्य के पठन से शिक्षण अधिगम अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बन जाता है। शर्मा जी के विस्तृत ज्ञान-भंडार से सभी लोग प्रभावित हुए। अवसर पर उपस्थित मॉरीशस के प्रसिद्ध लेखक व साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर, श्री प्रह्लाद रामशरण, डॉ. हेमराज सुन्दर, श्री राज हीरामन आदि ने सृजनात्मक लेखन संबंधी स्थानीय समस्याओं की चर्चा भी की।

श्री प्रेमपाल शर्मा जी ने अपनी मॉरीशस यात्रा के अंतर्गत अन्य कई साहित्यिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया साथ ही आपने मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के टी.वी. कार्यक्रम 'सृजन' में भी भाग लिया।

डॉ. कुमारदत्त गुदारी की रिपोर्ट

एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी एवं सम्मान स्मारोह

9 जनवरी, 2016 को मुंबई में चर्चगेट स्थित के. सी. महाविद्यालय में 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन', के. सी. महाविद्यालय और 'सत्याग्रह' संस्था के संयुक्त तत्वावधान में 'प्रवासी भारतीय और हिंदी' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में ब्रिटेन से रचनाकार तजेंद्र शर्मा व श्रीमती शैल अग्रवाल विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रथम सत्र में 'कथा यू. के.' संस्था, इंग्लैंड के अध्यक्ष एवं प्रवासी कथाकार तजेंद्र शर्मा ने प्रवासी साहित्य को महत्व देते हुए कहा कि वे सीधे समाज में घुल-मिलकर अपनी स्थितियों को खुलकर कहानियों एवं कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहे हैं। 'सत्याग्रह' संस्था के अध्यक्ष श्री माणिक मुंडे ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति विभिन्न स्तरों पर कार्य किए जाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।इस अवसर पर 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन' द्वारा हिंदी भाषा व साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए इंग्लैंड में रह रही साहित्यकार और 'लेखनी' की संपादक श्रीमती शैल अग्रवाल का सम्मान किया गया। इस सत्र में कराची, पाकिस्तान की मूल सिंधी भाषा की लेखिका अतिया दाऊद की कविताओं का श्रीमती देवी नागरानी द्वारा सिंधी भाषा से हिंदी में अनूदित पुस्तक 'एक थका हुआ सच' का भी विमोचन किया गया।

दूसरे सत्र में प्रवासी साहित्य और उसकी वैश्विक स्थिति पर चिंतन करते हुए हिंदी की अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति को रेखांकित किया गया तथा कविता एवं अन्य विधाओं के संदर्भों को दर्शाया गया। तीसरे सत्र में विशेष अतिथि और प्रवासी साहित्य के वक्ता के रूप में उपस्थित श्रीमती शील निगम ने ऑस्ट्रेलिया में हिंदी की स्थिति को स्पष्ट करते हुए वहाँ के साहित्य और उसके भाषा बोध के साथ भाव और संवेदना के पक्ष को रेखांकित किया। इस सत्र का संचालन डॉ. प्रवीण चन्द्र बिष्ट ने किया।

परिसंवाद में विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों, प्राचार्यों, प्राध्यापकों, साहित्यकारों और अनेक विद्वानों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में 'महुआ' चैनल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राघवेश अस्थाना, इंडियन चैंबर ऑव कॉमर्स फॉर अफ़रमेटिव एक्शन के अध्यक्ष, श्री सुनील ज़ोडे विशेष रूप से उपस्थित थे।

लेफ़्टिनेंट डॉ. मोहसिन ख़ान की रिपोर्ट

मास्को वार्षिक हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता–2016

19 मार्च, 2016 को मास्को में रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' द्वारा तीन विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़नेवाले छात्रों के लिए हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारत के सुप्रीम कोर्ट के वकील श्री रणवीर सिंह शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रतियोगिता में रूसी छात्र-छात्राओं ने रुचि व उत्साह के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल के सदस्य प्राध्यापक गुलाब सिंह, प्राध्यापक शुभनारायण सिंह, रामेश्वर सिंह और प्रगति टिपणिस थे। इन छात्रों को हिंदी पढ़ानेवाले रूसी प्राध्यापक ने भी प्रतियोगिता के आयोजन में बड़े उत्साह से सहयोग दिया।

आभार: श्री जन विजय

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2016

9 से 17 जनवरी, 2016 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गानाइज़ेशन द्वारा 'विश्व पुस्तक मेला 2016' का आयोजन किया गया जिसका विषय 'भारत की सांस्कृतिक धरोहर' रखा गया था। मेले का उद्घाटन भारत की मानव संसाधन विकास मंत्री, माननीया श्रीमती स्मृति ज़ुबिन ईरानी द्वारा किया गया। मेले में चीन को अतिथि देश बनाया गया। मेले में अंग्रेज़ी, चीनी तथा हिंदी भाषा में 5000 से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गईं जिसमें कई प्रकाशकों ने भाग लिया। अलग-अलग स्टॉल में कई लेखकों की पुस्तकों का लोकार्पण तथा बच्चों के लिए कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। साथ-साथ फोटो प्रदर्शनियाँ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई थी। देश-विदेश से लेखकों, पुस्तक-प्रेमियों, प्रकाशकों तथा अधिकारियों, अनेक प्रकाशन गृहों तथा संगठनों सहित इस बार पुस्तक मेले में नौ दिनों के अंतर्गत लगभग 12 लाख लोगों ने भाग लिया।

साभार : जनसत्ता, आई.बी.एन. खबर व नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का वेबसाइट

टोरोंटो में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कवि सम्मेलन

12 मार्च, 2016 को टोरोंटो में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में AWIC के सौजन्य से हिंदी साहित्य सभा द्वारा एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें टोरोंटो के हिंदी, उर्दू और पंजाबी के लब्ध-प्रतिष्ठित कवियों ने भाग लिया। कवि सम्मेलन में कवियों ने नारी के विभिन्न गुणों का अद्भुत चित्रण किया तथा अंतरराष्ट्रीय मातृ दिवस को ध्यान में रखते हुए अपनी कविताओं में नारी के विभिन्न पहलुओं को उभारा। सम्मेलन में समीर लाल, श्याम त्रिपाठी, देवेंद्र मिश्रा, मीना चोपड़ा, अनिल पुरोहित, सरोजिनी जोहर, कमलजीत मान, कुलदीप, जगमोहन सांगा, सुधा मिश्रा, राज कश्यप, गोपाल बघेल, जहान मुनव्वर, परवीन सुल्ताना, ताहिर गौरा, फ़रहाद सुजाद, जुनैद अख्तर आदि ने अपनी कविताओं, शायरी और ग़ज़लों से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया। समारोह में श्रीमती त्रिपाठी, रीनू पुरोहित, अरुणा भटनागर, भूपिंदर बिरदी, सरनजीत मान, हलीमा सादिया भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री अनिल पुरोहित ने किया।

श्री अनिल पुरोहित की रिपोर्ट

तृतीय भोजपुरी नाट्य उत्सव

13 से 17 मार्च, 2016 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सामाजिक विज्ञान सभागार में रंगश्री संस्था द्वारा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से पाँच दिवसीय तृतीय भोजपुरी नाट्य उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. मणिंद्र नाथ ठाकुर व विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. अख्लाक अहमद आहन उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुख्य अतिथि के साथ फ़ारसी के विद्वान, इतिहासकार रश्मि चौधरी, नाट्य निर्देशक श्री महेंद्र प्रसाद सिंह, लेखक व जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर देवेंद्र चौबे आदि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. मणिंदर नाथ ठाकुर ने कहा कि "साहित्य मात्र रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं है अपितु वह दर्शन एवं समाज विज्ञान के सवालों से भी टकराता है। समाजशास्त्रियों को ऐसे स्रोतों से परिचित कराता है जिनसे चिंतन का विस्तार होता है।" उद्घाटन के उपरांत प्रो. देवेंद्र चौबे कृत 'सुराज' नाटक का सफल मंचन हुआ। नाटक का भोजपुरी अनुवाद तथा निर्देशन श्री महेंद्र प्रसाद सिंह ने किया। इस ऐतिहासिक नाटक की विशेषता उसका भव्य ऐतिहासिक सेट, कुशल रंग-व्यवस्था व कलाकारों का उत्कृष्ट अभिनय रहा।

पाँच दिवसीय उत्सव के अंतर्गत श्री महेंद्र प्रसाद सिंह के 'ढोंढ़ा मंगरु एवं लाचारी ब्रह्मचारी', श्री हृषिकेश सुलभ के 'अमली', श्री शिवमूर्ति के 'भरतनाट्यम्' व श्री महेंद्र प्रसाद सिंह के 'बबुआ गोबरधन' भोजपुरी नाटकों का भी मंचन हुआ।

17 मार्च को समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री अजित दुबे तथा विशिष्ट अतिथि श्री कुमार संजोय सिंह रहे। उत्सव में अनेक रंगकर्मियों की भागीदारी रही।

आभार : प्रो. देवेंद्र चौबे व श्री अखिलेश पाण्डेय

हिंदी राइटर्स गिल्ड द्वारा 'भावनाओं के भँवर से' पर चर्चा और रामधारी सिंह 'दिनकर' साहित्य का स्मरण

13 फरवरी, 2016 को कनाडा में ब्रैम्प्टन लाइब्रेरी की चिंकूज़ी शाखा के सभागार में हिंदी राइटर्स गिल्ड की मासिक गोष्ठी संपन्न हुई। गोष्ठी को दो सत्रों में बाँटा गया था। पहले सत्र में गिल्ड की लेखिका सविता अग्रवाल 'सवि' के काव्य संकलन 'भावनाओं के भँवर से' पर सुमन कुमार घई, कवि उमाकांत दुबे, आचार्य संदीप त्यागी, भुवनेश्वरी पांडे, नवोदित कवि अजय गुप्ता, डॉ. शैलजा सक्सेना, श्रीमती प्रमिला भार्गव तथा आशा बर्मन ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रथम सत्र का संचालन श्रीमती आशा बर्मन ने किया। दूसरे सत्र में भारत के राष्ट्रीय कवि स्व. रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य पर चर्चा और काव्य पाठ किया गया जिसमें डॉ. इन्दु रायज़ादा, डॉ. शैलजा सक्सेना, डॉ. उषा बंसल तथा सुरेश पाण्डे ने भाग लिया। इस सत्र का संचालन श्री सुरेश पांडे ने किया।

साभार : साहित्य कुंज

रंजनकलश कविता गोष्ठी

13 फरवरी, 2016 को रंजनकलश इंद्रपुरी, भोपाल में रंजनकलश कविता गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री देवेंद्र कुमार जैन ने की तथा श्री विनोद कुमार जैन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह में श्री देवेंद्र कुमार जैन, विनोद कुमार जैन, गोपेश बाजपेयी, मुशाक अह्मद, चन्द्र प्रकाश त्रिपाठी, जन नारायण चौधरी, मांडवी सिंह, घन श्याम मैथिल, राजेंद्र राजन, शंकर शरणलाल बत्ता, सत्य प्रकाश चिराग, महेश अग्रवाल, किशन तिवारी आदि ने कविता पाठ किया। अवसर पर श्री विनोद कुमार जैन ने 'रंजनकलश गुलाबचन्द्र जैन सम्मान' की घोषणा भी की। समारोह का संचालन श्री मुस्ताक़ अह्मद ने किया तथा आभार ज्ञापन श्री जय नारायण चौधरी ने किया।

डॉ. सुशील गुरू की रिपोर्ट

दिल्ली में हिंदी महोत्सव

6 मार्च, 2016 को कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में वाणी फाउंडेशन और ऑक्सफ़ोर्ड बुक्स्टोर्स के तत्वावधान में एक दिवसीय हिंदी महोत्सव का आयोजन किया गया। हिंदी महोत्सव में वरिष्ठ व युवा साहित्यकार, कवि, आलोचक, मीडिया कर्मी व रंगमंच से जुड़े विद्वानों ने भाग लिया और समकालीन समाज से जुड़े कई विषयों पर परिचर्चाएँ भी हुईं जिसमें वाणी फाउंडेशन के विद्वानों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

साभार : हिंदी वेब दुनिया. कॉम

'काव्यबयार' कवि सम्मेलन

9 जनवरी, 2016 को गोर-मीडोज़ कम्युनिटी सेंटर, ब्रैम्प्टन, कनाडा में नव वर्ष, गणतंत्र दिवस, प्रवासी भारतीय दिवस, विश्व हिंदी दिवस, लोहड़ी, मकर संक्रांती, पोंगल आदि धार्मिक व सांस्कृतिक पर्वों को समेटे कवि सम्मेलन - 'काव्यबयार' संपन्न हुआ। सभागार में इस बार मैत्री का ऐसा रंग जमा कि कवि, शायर और श्रोता सभी भावविभोर हो उठे। विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा की ओर से यह एक कोशिश थी कि हिंदी कवियों के साथ-साथ उर्दू शायरों को भी आमंत्रित किया जाए ताकि सच्चे मायनों में हिंदी-उर्दू भाईचारे की छटा बिखेर कर महात्मा गाँधी के सपनों की हिंदुस्तानी भाषा की सोच को वास्तविकता के धरातल पर उतारा जा सके। इस अवसर पर प्रो. सरन घई ने नवंबर-दिसंबर 2015 में अपनी भारत यात्रा का वृत्तांत भी सुनाया और विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा की अगली वैश्विक योजना 'लेख संग्रह : विश्व शांति' के बारे में विस्तार से चर्चा की।

'काव्यबयार' में उपस्थित कवियों व शायरों ने अपनी रचनाओं से उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया। अवसर पर विश्व के 66 रचनाकारों की संयुक्त कृति 'खट्टे-मीठे रिश्ते' उपन्यास के कनाडाई रचनाकारों को भी सम्मानित किया गया। सम्मानित होनेवाले सह-रचनाकार आचार्य संदीप त्यागी, श्री संजीव अग्रवाल, श्रीमती सविता अग्रवाल तथा नीरा राजपाल हैं। मंच संचालन प्रो. सरन घई ने किया।

प्रो. सरन घई की रिपोर्ट

युवा पत्रकारों की कार्यशाला

19 मार्च, 2016 को राजघाट, नई दिल्ली में 'प्रज्ञा संस्थान' और 'गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति' के तत्वावधान में 'सत्याग्रह मण्डप' में 'युवा पत्रकारों की कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि समाजसेवी व गांधीवादी श्री गोविंदाचार्य थे तथा अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार श्री जवाहर लाल कौल ने की। कार्यशाला का विषय 'संपादक के तौर पर गांधी' था जिसके संदर्भ में 'अनाग्रह' और 'आज की पत्रकारिता में विज्ञापन' पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त 'गांधी स्मृति दर्शन समिति' के अध्यक्ष एस. ए. जमाल, 'प्रज्ञा संस्थान' के सचिव श्री राकेश सिंह, 'सर्वोदय विचार' परिवार के सदस्य श्रीराम धीरज और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. अनुराग दवे भी उपस्थित थे। कार्यशाला का संचालन डॉ. अनुराग दवे और श्री धीरेन्द्र कुमार राय ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्रीराम धीरज जी ने किया।

साभार: टुडे ब्रेकिंग न्यूज़

श्री अरविंद कुमार की पुस्तक 'शब्दवेध' का लोकार्पण

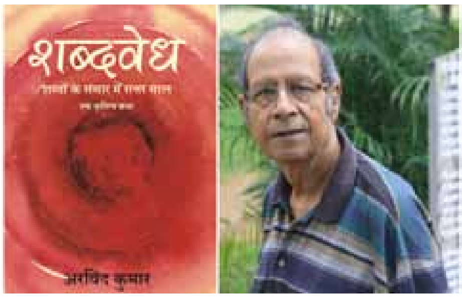

24 जनवरी, 2016 को जयपुर साहित्य उत्सव 2016 के अवसर पर श्री अरविंद कुमार की नई पुस्तक 'शब्दवेध' का लोकार्पण गीतकार जावेद अख़्तर द्वारा हुआ। अवसर पर जावेद अख़्तर जी ने कहा कि "लोगों को शब्दों का तप करना चाहिए। शब्द ही लोगों को लोगों से जोड़ते हैं। शब्द का सही इस्तेमाल नहीं होने से रिश्ते तक खराब हो जाते हैं।" हिंदी भाषा के लिए काम करनेवाले, 'अरविंद लैक्सिकन' ऑनलाइन कोश के संचालक व कोशकारिता के क्षेत्र के युगांतकारी व्यक्ति, श्री अरविंद कुमार का कहना है कि "जो शब्द लुप्त हो गए हैं उनको बचाने में लगा हूँ।" उन्होंने अपने जीवन में आए उतार चढ़ावों का उल्लेख करते हुए शब्दों को लेकर कई जानकारी दीं।

अरविंद कुमार जी ने सन् 1945 में पत्रकारिता जगत में प्रवेश किया। वे पत्रकारिता, कविता, कथा लेखन, सामाजिक विषयों पर निबंध, कला-ड्रामा-फ़िल्म समीक्षा तथा इंग्लिश से हिंदी, हिंदी-इंग्लिश और संस्कृत से हिंदी अनुवाद के क्षेत्रों में सक्रिय रहे हैं। पिछले 40 वर्षों से अरविंद कुमार जी हिंदी-इंग्लिश अभिव्यक्तियों के संसार के सबसे बड़े डेटाबेस 'अरविंद लैक्सिकन' का संकलन करते आ रहे हैं।

उनके संघर्षों और कार्यों को समेटती 'शब्दवेध' अलग तरह की आत्मकथात्मक पुस्तक है। 'शब्दवेध' एक ऐसे किशोर की प्रेरक आत्मकथा है जो जीवन की दरिया में थपेड़े खाता, लहरों के संग उठता-गिरता, हिचकोले खाता, रौ के साथ अनसोचे बहता चलता हलका-फुलका तिनका था जिसके जीवन के फ़ैसले दूसरे ले रहे थे। लेकिन हर बदलती लहर के साथ हाथ पैर मारता, डूबने से बचता रहा और मन ही मन सपने बुनता रहा और धीरे-धीरे निजी जिजीविषा और ज्ञानेच्छा के सहारे शाम के समय पढ़ता, एक के बाद एक लक्ष्य की पूर्ति करता, आगे बढ़ता हिंदी पत्रकारिता तक जा पहुँचा। और सब कुछ छोड़-छाड़ कर सन् 1996 में आधुनिक भारत का पहला हिंदी थिसॉरस समांतर कोश बना कर 'शब्दऋषि' के नाम से प्रकाशित किया। तब से अब तक श्री अरविंद कुमार ने आठ कोश प्रकाशित किए हैं।

'शब्दवेध' की सामग्री को उन्होंने नौ संभागों में विभाजित किया है। एक संभाग अगले संभाग तक सहज भाव से ले जाता है जो इस प्रकार हैं' 1. पूर्वपीठिका, 2. समांतर सृजन गाथा, 3. तदुपरांत, 4. कोशकारिता, 5. सूचना प्रौद्योगिकी, 6. हिंदी, 7. अनुवाद, 8. साहित्य, 9. सिनेमा।

आत्मकथा व शब्दों के संसार का दिग्दर्शन करवाती 'शब्दवेध' नए प्रयोग के तौर पर सामने आई है जो हर नौजवान को कुछ करने के लिए उत्साहित करेगी, हर हिंदी प्रेमी को कुछ नया पढ़ने को देगी, पुरातन से नवीनतम भारतीय संस्कृति को आज के ग्लोकुलित विश्व की पृष्ठभूमि में समझने में मदद करेगी।

श्रीमती मीता लाल की रिपोर्ट

'गोडसे@गांधी.कॉम' व 'मास्टर साब' के सिंहली भाषा में अनुवाद का लोकार्पण

श्री लंका स्थित कॅलणिय विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. उपुल रंजीत हेवावितानगमगे द्वारा हिंदी से सिंहली भाषा में अनूदित भारतीय साहित्य की दो प्रमुख कृतियों, क्रमश: प्रो. असग़र वजाहत कृत 'गोडसे@गांधी.कॉम' तथा महाश्वेता देवी कृत 'मास्टर साब' का लोकार्पण समारोह विगत 17 मार्च 2016 को श्री लंका राष्ट्रीय पुस्तकालय सेवा मंडल के सभागार में संपन्न हुआ।

सेवानिवृत्त प्रो. चंद्रसिरि पल्लियगुरु ने इस लोकार्पण मंच की अध्यक्षता की। कोलंबू विश्वविद्यालय के समकालीन भारतीय अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. सँदगोमि कोपरहेवा ने स्वागत वक्तव्य दिया। अनुवादक ने कृतियों का परिचय देते हुए हिंदी और अन्य भारतीय भाषा-साहित्य को सिंहली में अनूदित करके श्री लंका के पाठकों को उपलब्ध कराने के महत्व पर बल दिया। प्रसिद्ध सिनेमा तथा नाटक निर्देशक, 'दिवयिन' राष्ट्रीय सिंहली समाचार पत्र के संपादक श्री जयंत चंद्रसिरि ने 'गोडसे@गांधी.कॉम' नामक हिंदी नाटक पर अपना गंभीर तथा सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

समारोह की शोभा विशेष रूप से इस अवसर पर नाटक के लेखक प्रो. असग़र वजाहत की व्यक्तिगत उपस्थिति से बढ़ी। उन्होंने 'हिंदी नाटकों की वर्तमान स्थिति' विषय पर एक वक्तव्य भी प्रस्तुत किया। प्रो. असग़र वजाहत के लिए सिंहली में प्रस्तुत इस समारोह का तत्काल हिंदी भाषांतर रिद्मा निषादिनी लंसकार ने किया।

समारोह का संचालन श्री लंका फ़िल्म प्रमाणन मंडल के अध्यक्ष श्री समन् अतावुधट्टि ने अत्यन्त आकर्षक रूप से किया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध गीतकार पूज्य भिक्षु रंबुकन सिद्धार्थ थेरो, कॅलणिय विश्वविद्यालय के कुलपति वरिष्ठ प्रोफ़ेसर सुनन्द मद्दुमा बण्डार, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की हिंदी अध्यापिका शीरीन ख़ुरेशी, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान के प्रोफ़ेसर रियास अहमद, जाने-माने लेखक गण, नाटककार व प्राध्यापक गण आदि उपस्थित थे।

इन ग्रंथों का प्रकाशन फ़ास्ट एड्स द्वारा किया गया और इस लोकार्पण समारोह का आयोजन कोलंबू विश्वविद्यालय के समकालीन भारतीय अध्ययन केंद्र तथा कॅलणिय विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययन विभाग द्वारा किया गया।

प्रो. हेवावितानगमगे की रिपोर्ट

श्रीमती पूनम जुनेजा के उपन्यास 'प्रेम, विवाह और खिटपिट' का लोकार्पण

23 फरवरी, 2016 को हिंदी भवन, नई दिल्ली में दिल्ली साहित्य सम्मेलन द्वारा श्रीमती पूनम जुनेजा कृत कहानी संग्रह 'प्रेम, विवाह और खिटपिट' का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में गृह राज्य मंत्री, माननीय श्री किरण रिजिजू उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली के प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री हरीश नवल को आमंत्रित किया गया था। समारोह की अध्यक्षता पूर्वी दिल्ली नगर निगम के महापौर, श्री हर्षदीप मल्होत्रा ने की व स्वागताध्यक्ष ग्राफ़िसऐड्स, प्रसिद्ध समाज सेवी, श्री मुकेश गुप्ता रहे। सुप्रसिद्ध कवयित्री, श्रीमती इंदिरा मोहन, साहित्य मंत्री, दिल्ली साहित्य सम्मेलन, श्री रवि शर्मा व सुप्रसिद्ध कवि, डॉ. अशोक चक्रधर विशिष्ट अतिथि थे।

माननीय श्री किरण रिजिजू ने श्रीमती जुनेजा की प्रशंसा करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा हिंदी को विश्व की भाषा बनाने के प्रयास को जारी रखने का आश्वासन दिया। अवसर पर बी.जे.पी. के वरिष्ठ नेता और राज्य सभा सांसद सत्यनारायण जटिल, वरिष्ठ कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी, पीएचडी चैंबर ऑव कॉमर्स के अध्यक्ष, श्री मुकेश गुप्ता, कीर्ति काले, गजेंद्र सोलांकी और राज्य भाषा सचिव गिरिश शंकर आदि महानुभाव तथा अनेक साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

आभार : कनक माथुर व साधना प्लस

प्रोफ़ेसर देवेंद्र चौबे द्वारा संपादित 'हमारे समय का साहित्य' पुस्तक का लोकार्पण

21 जनवरी, 2016 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय द्वारा चर्चित आलोचक एवं जे.एन.यू. के प्रोफ़ेसर देवेंद्र चौबे द्वारा संपादित सद्य प्रकाशित पुस्तक 'हमारे समय का साहित्य' का लोकार्पण प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. के. सोपोरी द्वारा किया गया। श्री गणपत तेली, मीनाक्षी, अजय कुमार यादव, देविना अक्षयवर, मो. मुश्ताक और दीप कुमार मित्तल इस पुस्तक के सह-संपादक हैं। प्रो. एस. के. सोपोरी ने कहा कि ''इस पुस्तक में साहित्य के ज़रिए नब्बे के बाद के समाज को समझने का महत्वपूर्ण प्रयास किया गया है और इस पुस्तक में अन्य भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं के साहित्य का अनुवाद भी शामिल है।" प्रो. देवेंद्र चौबे ने कहा कि साहित्य और विचार की दुनिया सामाजिक विकास की ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से निर्धारित होती है इसलिए साहित्य किसी भी समाज को समझने का सबसे बेहतर ज़रिया होता है और आज के समय को पहचानने, उसकी चुनौतियों व उसमें साहित्य की भूमिका को समझने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है जिसमें नामवर सिंह, मैनेजर पांडेय, रोहिणी अग्रवाल, रविभूषण, तुलसीराम, ओम थानवी, प्रेमपाल शर्मा, दुर्गा प्रदाद गुप्त जैसे विचारक, केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेयी, मंगलेश डबराल, लीलाधर मंडलोई, अनामिका, बद्रीनारायण, दिनेश सिंदल, जयप्रकाश कर्दम, गोबिंद प्रसाद, अखलाक अह्मद आहन, मकरंद परांजपे, जीजेवी प्रसाद, ओनो नो कोमोची, जंग जी योंग, संदीप चटर्जी जैसे कवि, मृदुला गर्ग, संजीव, पंकज बिष्ट, प्रेमकुमार मणि, सूर्यनाथ सिंह, राकेश तिवारी, हरिराम मीणा, श्यौराज सिंह बेचैन, देवेन्द्र चौबे, सूज़न विश्वनाथन, फ्रौंसवाज़ लोरौंजे, जकरिया तामेर जैसे कथाकार, रविकेश मिश्र, आशीष अग्निहोत्री, उनिता सच्चिदानंद, देविना अक्षयवर, मो. मुश्ताक, गणपत तेली, शीतांशु कुमार जैसे अनुवादक शामिल हैं। कार्यक्रम का संचालन गणपत तेली तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रकाशन संस्थान के प्रबंधक हरिश चंद्र शर्मा ने किया।

देविना अक्षयवर व मीनाक्षी की रिपोर्ट

'अपने ही घर में' का विमोचन

17 दिसंबर, 2015 को हैदराबाद में श्री सिंधी गुरु संगत सभा द्वारा श्रीमती देवी नागरानी की अनूदित पुस्तक 'अपने ही घर में' का विमोचन हैदराबाद दरबार के अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध कवि श्री शंकरदास बोलाकी के हाथों संपन्न हुआ। साथ ही एक काव्य गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। अवसर पर श्रीमती विनीता शर्मा, श्रीमती मोना, श्रीमती रत्नाकला मिश्रा, श्री गोविंद अक्षय, श्री दुर्गा प्रसाद, श्री चंद्रकांत खंडेकर, श्री कुंज बिहारी गुप्ता, श्रीमती कुमुदबाला मुखर्जी, श्रीमती सुनीता लुल्ला, श्रीमती देवी नागरानी आदि ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुनीता लुल्ला ने किया।

श्रीमती देवी नागरानी की रिपोर्ट

'अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की व्यावहारिक परख' का लोकार्पण

19 फरवरी, 2016 को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद स्थित सम्मेलन-कक्ष में 'साहित्य मंथन' द्वारा डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की पुस्तक 'अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की व्यावहारिक परख' का लोकार्पण किया गया। यह लोकार्पण अरबामिंच विश्वविद्यालय, इथियोपिया के भाषाविज्ञान विभाग के अध्यक्ष, प्रो. गोपाल शर्मा के हाथों किया गया। आपने पुस्तक की लेखिका गुर्रमकोंडा नीरजा को साधुवाद देते हुए कहा कि ''यह पुस्तक इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि इसमें भाषिक अनुप्रयोग की पड़ताल के अनेक व्यावहारिक मॉडल उपलब्ध हैं" तथा यह संतोष व्यक्त किया कि इस पुस्तक में विभिन्न विमर्शों की भाषा के विवेचन द्वारा 'उत्तर आधुनिक अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान' को भी पुष्ट किया गया है। समारोह में अनेक भाषा-प्रेमियों और शोधार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

साभार : 'हैदराबाद से' ब्लॉग

'हिंदी साहित्यनामा' का लोकार्पण

23 जनवरी, 2016 को गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली में काकासाहेब कालेलकर के जन्म दिवस के अवसर पर गोल्ड थॉट इन्फ़ो मीडिया नामक प्रकाशक द्वारा आयोजित प्रोत्साहन सम्मान समारोह में हिंदी साहित्य जगत में पहली बार 'हिंदी साहित्यनामा' नाम से एक विस्तृत निर्देशिका (डायरेक्ट्री) के संकलन का विमोचन किया गया। लोकार्पण जनसत्ता के संपादक श्री मुकेश भारद्वाज, वरिष्ठ साहित्यकार श्री गंगेश गुंजन, गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा की अध्यक्षा श्रीमती कुसुम शाह, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक श्री दीपांकर श्री ज्ञान, युवा साहित्यकार श्रीमती रीता दास राम एवं विष्णु प्रभाकर प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री अतुल कुमार प्रभाकर के हाथों हुआ। 'हिंदी साहित्यनामा' पाठक और कलम के बीच सेतु की भूमिका स्थापित करती है। इसके पहले खण्ड में हिंदी साहित्य की 100 ऑफ़लाइन पत्रिकाओं, 100 फेसबुक समूहों, 100 ब्लॉग्स और 100 ऑनलाइन पत्रिकाओं अर्थात 400 साहित्यिक प्रयासों को संकलित किया गया है। इस अवसर पर 'हिंदी साहित्यनामा' के संपादक एवं प्रकाशक सुशील स्वतंत्र, सन्निधि संगोष्ठी की संयोजिका किरण आर्य और वरिष्ठ पत्रकार प्रसून लतांत भी उपस्थित थे।

साभार: मीडिया मोरचा.कॉम

अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह तथा पुस्तक लोकार्पण

जनवरी, 2016 को गुना के मानस भवन में सामाजिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक संस्था 'दृष्टि' द्वारा अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह तथा पुस्तक लोकार्पण का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य रूप से गुना विधायक पन्नालाल शाक्य, नगर के प्रमुख समाजसेवी ओ. एन. शर्मा, अ. भा. स्वर्ण समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मवीर सिंह कुशवाहा, मध्य प्रदेश के प्रांत धर्माचार्य, संपर्क प्रमुख, बृजेश सिंह चौहान एवं साहित्यकार डॉ. ओम जोशी उपस्थित थे जिन्होंने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर मुरैना के गीतकार भगवती प्रसाद कुलश्रेष्ठ की कृति 'अमलताश खिल रहा', खण्डवा के नवगीतकार गोपीनाथ कालभोर की कृतियाँ 'जब सूझ नहीं पड़ती', 'आँगन की प्रीत', बदरवास के साहित्यकार पं. गंगाप्रसाद चतुर्वेदी की कृति 'सुकृति', टीकमगढ़ के साहित्यकार भारत विजय बगेरिया की कृति 'रहस्य', गुना के साहित्यकार डॉ. स्वर्ण सिंह रघुवंशी की कृतियाँ 'रेजा' तथा 'यथाथर' कुल सात पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

समारोह के अंतर्गत इक्यावन साहित्यकारों का सम्मान भी किया गया। श्री संतोष परिहार, श्री रामबरन शर्मा व श्रीमती रामदुलारी शर्मा को 'हरिकृष्ण प्रेमी सम्मान', डॉ. रामसेवक 'प्रकाश', श्री गोपीनाथ कालभोर, श्री सुभाष चन्द्र जैन 'सरल', श्री विष्णु 'साथी', डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल', डॉ. लक्ष्मीनारायण बुनकर, डॉ. गजाधर प्रसाद पचैरिया, श्री संदीप राशिनकर व श्री जयवीर सिंह यादव को 'गिरिजाकुमार माथुर सम्मान', डॉ. ओंकारलाल शर्मा 'प्रमद', श्री भगवती प्रसाद कुलश्रेष्ठ व डॉ. राजेश रावल को 'श्रीकृष्ण सरल सम्मान', श्री संदीप सृजन, डॉ. महेंद्र कुमार अग्रवाल, श्री अरविन्द शर्मा, सुश्री श्रीवास्तव, श्रीमती सुमन त्रिपाठी व डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय को 'गणेशशंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान', डॉ. हरिप्रकाश जैन 'हरि', श्री मधुर कुलश्रेष्ठ, डॉ. रघुवंशी, श्री दाताराम स्वदेशी, श्री भारत विजय बगेरिया, सुश्री श्रीति, डॉ. कमलेश थापक, डॉ. अमित शुक्ल, श्री वृन्दावन राय 'सरल', डॉ. घनश्याम भारती, सुश्री उषा चामलीकर, सुश्री प्रभा चामलीकर, डॉ. के. पी. अरोरा, प्रेमनारायण श्रीवास्तव 'प्रेम', डॉ. नरेन्द्रनाथ लाहा व श्री लक्ष्मीनारायण कोष्ठी को 'शब्द-शिल्पी सम्मान', डॉ. धराश्री महान्ति, डॉ. हरकांत अर्पित, श्री प्रेम सिंह 'प्रेम', कु. रंजन शर्मा, श्रीमती नीलम कुलश्रेष्ठ, श्री हरीश सोनी, श्री सुनील शर्मा चीनी, श्री राम अवतार सिंह तोमर, श्री ग्वालियरी, डॉ. ओमप्रकाश हयारण 'दर्द', श्री अली ताज, श्री परमार, श्री श्रीकृष्ण शरद व डॉ. पुष्पा पटेल को 'साहित्य सेवी सम्मान' तथा श्री अशोक खांत, श्री नरेश कश्यप को 'वागेश्वरी सम्मान' प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सतीश चतुर्वेदी ने किया तथा आभार ज्ञापन संस्था की सचिव श्रीमती मिथिलेश सेंगर ने किया।

अनिरुद्ध सिंह सेंगर की रिपोर्ट

श्रीमती विजयलक्ष्मी विभा की कृति 'जग में मेरे होने पर' पुरस्कृत

17 फरवरी, 2016 को समर्थन सभागार में अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल एवं श्रीमती सुमन चतुर्वेदी स्मृति ट्रस्ट, भोपाल के तत्वावधान में कवयित्री एवं लेखिका श्रीमती विजयलक्ष्मी विभा को उनकी काव्य-कृति 'जग में मेरे होने पर' के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता सुविख्यात साहित्यकार प्रो. मूलाराम जोशी ने की तथा मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री, माननीय श्री उमाशंकर गुप्ता रहे। श्रीमती विभा ने अपने वक्तव्य में कहा कि ''सम्मान और पुरस्कार प्राप्त करना गौरवपूर्ण है परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि ये सम्मान और पुरस्कार हमारी लेखनी के दायित्वों को और बढ़ा देते हैं तथा साहित्यकार एक ऐसी ऊर्जा है, ऐसी ताकत है जो वायुमंडल में छायी बुराइयों को दूर कर सकता है।" कार्यक्रम में श्री सतीश चतुर्वेदी, श्री यतीन्द्रनाथ राही, श्री वीरेन्द्र सिंह एवं श्रीमती सुभद्रा खुराना जैसे विद्वान उपस्थित थे।

राजो किंजल्क की रिपोर्ट

वर्धा में 'वैष्णव भक्ति नाट्य परंपरा' का लोकार्पण

13 मार्च, 2016 को प्रदर्शनकारी कला विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में आयोजित बीकानेर राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय पत्रिका 'जनकृति' के संपादक कुमार गौरव मिश्रा की पुस्तक 'वैष्णव भक्ति नाट्य परंपरा' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर नेशनल स्कूल ऑव ड्रामा के पूर्व निदेशक देवेन्द्र राज अंकुर, प्रसिद्ध निदेशक संजना कपूर, कोलकाता के रंगकर्मी अज़हर आलम, मुंबई विश्वविद्यालय के नाट्यकला विभाग के निदेशक मंगेश बनसोड, जाने-माने पत्रकार मधु आचार्य आशावादी एवं सूर्य प्रकाशन मंदिर के अध्यक्ष प्रशांत बिस्सा आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

श्री बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

नॉर्वे के श्री सुरेशचंद्र शुक्ल भारत में सम्मानित

13 मार्च, 2016 को देवगढ़, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश में केंद्रीय मंत्री कलराज मिश्र द्वारा नॉर्वे के जाने-माने हिंदी साहित्यकार श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' को विदेशों में हिंदी सेवा और लेखन के लिए 'प्रभा सिंह साहित्य सम्मान' दिया गया। श्री सुरेशचंद्र शुक्ल नॉर्वे से प्रकाशित हिंदी-नॉर्वेजीय द्वैभाषीय-द्वैमासिक पत्रिका 'स्पाइल-दर्पण' का संपादन गत 28 वर्षों से कर रहे हैं और नॉर्वे में हिंदी स्कूल के संस्थापक हैं। छत्तीसगढ़ के हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष श्री विनय कुमार पाठक और अन्य विद्वज्जन कार्यक्रम में उपस्थित थे। श्री जीतेन्द्र सिंह संजय ने समारोह का संचालन किया

श्री सुरेशचंद्र शुक्ल की रिपोर्ट

संपतदेवी मुरारका को 'श्रीराजकुमार चोपड़ा मौलिक कृति भागीरथ सम्मान'

9-10 जनवरी, 2016 को तमिल नाडु हिंदी साहित्य अकादमी एवं द्वारकादास गोवर्धनदास वैष्णव कॉलेज, चेन्नई के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में अरुम्बाक्कम स्थित डी. जी. वैष्णव कॉलेज के सभागार में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में द्विदिवसीय चतुर्थ अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। अवसर पर हैदराबाद की लेखिका संपतदेवी मुरारका को उनकी मौलिक कृति 'यात्रा क्रम तृतीय भाग' के लिए 'श्रीराजकुमार चोपड़ा भागीरथ सम्मान' प्रदान किया गया। उद्घाटन व समापन समारोह के मुख्य अतिथि क्रमशः डॉ. बालमुकुंद पांडे (राष्ट्रीय संगठन सचिव, नई दिल्ली) और पश्चिम बंगाल के राज्यपाल, महामहिम श्री केशरीनाथ त्रिपाठी रहे। संपतदेवी मुरारका को यह सम्मान महामहिम श्री केशरीनाथ त्रिपाठी के हाथों द्वारा प्रदान किया गया। मंच संचालन क्रमशः मंजू रुस्तगी व श्रावणी भट्टाचार्य ने किया तथा आभार ज्ञापन रविता भाटिया ने किया।

श्रीमती संपतदेवी मुरारका की रिपोर्ट

श्रद्धांजलि

श्री रवींद्र कालिया

9 जनवरी, 2016 को हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार, संस्मरण लेखक श्री रवींद्र कालिया का 77 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। आपका जन्म 11 नवंबर, 1939 को पंजाब के जलंधर शहर में हुआ था। आप 60 के दशक में 'धर्मयुग' पत्रिका में प्रसिद्ध लेखक धर्मवीर भारती के सहयोगी थे तथा कोलकाता से प्रकाशित पत्रिका 'वागर्थ' के संपादक भी रहे। बाद में आप भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक तथा 'ज्ञानोदय' पत्रिका के संपादक बने। आप साठोत्तरी कहानी के प्रमुख लेखकों में तथा ज्ञानरंजन व दूधनाथ सिंह की पीढ़ी के चर्चित लेखक रहे। आपको उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' तथा 'लोहिया सम्मान', पंजाब सरकार द्वारा 'शिरोमणि सम्मान', उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'प्रेमचंद स्मृति सम्मान' व मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा 'पदुमलाल बक्शी सम्मान' प्राप्त हुए। आपकी प्रमुख कृतियों में 'खुदा सही सलामत है', 'गरीबी हटाओ','ग़ालिब छुटी शराब', 'काला रजिस्टर','नौ साल छोटी पत्नी', '17 रानडे रोड', 'एबी.सी.डी.' आदि शामिल हैं। आपने अमरकांत और मोहन राकेश की कहानियों का संचयन भी किया। भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक लीलाधर मंडलोई, दूधनाथ सिंह, ज्ञानरंजन, चित्रा मुद्गल, सुधा अरोड़ा, अखिलेश समेत कई लेखकों ने श्री रवींद्र कालिया के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया। *साभार: लाइव हिंदुस्तान.कॉम*

श्री अमर सिंह रमण

9 जनवरी, 2016 को सूरीनाम के प्रसिद्ध कवि, नाटककार, हिंदी-हिंदुस्तानी के कर्मठ सेवक श्री अमर सिंह रमण का 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 23 जनवरी, 1932 को हुआ था। आप एक किसान और दर्ज़ी थे जिन्होंने हिंदी स्वाध्याय और अध्यापन को विभिन्न आपदाओं के बावजूद अपना जीवन धर्म बना लिया। अहम और धन दोनों से रहित समाज सेवी अमर सिंह रमण शब्दों और दिल के अनंत धनी थे। आपने केंद्रीय हिंदी संस्थान से डिप्लोमा और कोविद की उपाधि प्राप्त की। बहुमुखी प्रतिभा वाले अमर जी ने कवि, अभिनेता, रंगमंच निर्देशक, गायक और समाज सेवी होते हुए हमेशा नेपथ्य में काम किया। 1957 में आपके प्रयासों से रामचरितमानस को पढ़ने-पढ़ाने के लिए बनी 'प्रकाश पाठशाला' आपके लिखे नाटक, एकांकी, गीत और रामलीला जैसी भारतीय सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बन गई। 'फूलों के पंछी', 'फूलों का बहार', 'बसंत होली', 'कृष्ण सुदामा', 'लक्ष्मी पूजा' आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

श्रीमती कविता मालवीय की रिपोर्ट

श्री अनिरुद्ध नीरव

17 फरवरी, 2016 को हिंदी साहित्यकार व नवगीतकार तथा सरगुजिहा साहित्य को अपनी रचनाओं से समृद्ध करनेवाले जाने-माने लेखक श्री अनिरुद्ध नीरव का 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 1 जुलाई, 1945 को अंबिकापुर के सरगुजा ज़िला, छत्तीसगढ़ में हुआ था। आप नवगीत आंदोलन के अग्रणी रचनाकार माने जाते हैं। आप कई कवि सम्मेलनों एवं आकाशवाणी व दूरदर्शन के कार्यक्रमों में भाग लेते रहे हैं। आपकी रचनाएँ 'धर्मयुग', 'नवनीत', 'कादंबिनी' आदि साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। आपकी रचनाओं में कहानियाँ, बाल-साहित्य तथा नवगीत-संग्रह शामिल हैं जैसे 'उड़ने की मुद्रा में', 'खेल बिन बच्चा', 'सिर्फ़', 'दिन भर का मैनपाट', 'बैल मत ख़ुद को समझ', 'बहस के बाद भी' आदि। आपने सरगुजिहा भाव की भूमि पर छत्तीसगढ़ के संघर्षों को अपनी कविताओं में पहचान दी।

साभार: फेसबुक व भास्कर.कॉम

श्री अजामिल माताबदल

14 मार्च, 2016 को मॉरीशस के वरिष्ठ हिंदी सेवी, लेखक व प्रचारक श्री अजामिल माताबदल का 71 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। माताबदल जी एक साथ शिक्षण, लेखन, संपादन, हिंदी प्रचार संस्था प्रशासन आदि क्षेत्रों में आजीवन सक्रिय रहनेवाले अनूठे हिंदी सेवियों में गिने जाते हैं। आप मॉरीशस और आप्रवासी देशों में उस विशिष्ट पूजनीय पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं जिसने हिंदी की सेवा को नौकरी अथवा रोज़गार के साधन मात्र से ऊपर अपने जीवन के उद्देश्य के रूप में मानकर आजीवन भाषा की सेवा की।

जीवन

श्री अजामिल माताबदल का जन्म 1945 में मॉरीशस के मोर्सेलमाँ सें आँद्रे गाँव में हुआ था। आपने हिंदी में उत्तमा तक की पढ़ाई करने के बाद पंजाब विश्वविद्यालय, भारत से बी.ए. (जनरल) की उपाधि प्राप्त की। पत्रकारिता में डिप्लोमा के साथ ही आपने प्रशिक्षण विद्यालय में प्रो. रामप्रकाश से हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने शिक्षण प्रशासन, संपादन, Pay Research System आदि क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विशेष कार्य

20 वर्षों से भी अधिक हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान रह चुके माताबदल जी हिंदी संगठन तथा सरकारी हिंदी शिक्षक संघ से भी जुड़े रहे। मॉरीशस में हिंदी अध्यापन के क्षेत्र में आपका अमूल्य योगदान है। आप सितंबर 2001 से सितंबर 2005 तक शिक्षा मंत्रालय के युनिट के रूप में कार्यरत विश्व हिंदी सचिवालय के प्रभारी अधिकारी रहे तथा 2007 से 2016 तक सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य रहे। 1981 में आप शिक्षा मंत्रालय में हिंदी करिकलम स्टीयरिंग कमिति के सदस्य रहे, 1980-1981 तक मॉरीशस शिक्षण संस्थान के परिषद सदस्य रहे, 1979-1981 तक हिंदी पाठ्य-पुस्तक तकनीकी समिति के सदस्य रहे, 1979 में रिचर्ड कमिशन ऑव इन्क्वायरी ऑन एजुकेशन के हिंदी प्रतिनिधि, 1985-1990 में हिंदी में पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तकों और अध्यापकों के लिए नियमावली तैयार करने के लिए हिंदी करिकलम डिवलॉप्मेंट युनिट में पैनल के सदस्य के रूप में भी कार्यरत रहे। शिक्षा मंत्रालय की ओर से चलाई जानेवाली सायंकालीन व सप्ताहांत स्कूलों का निरीक्षण भी करते थे।

संपादन व प्रकाशन

आपकी रचनाएँ, कहानी, कविता व लेख अनेक स्थानीय व अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं तथा आपने कई पुस्तकों व पत्रिकाओं का प्रकाशन व संपादन भी किया। Name of Places in Mauritius, Theoretical bases of Curriculum, Reorganisation of Curriculum, Education for Change, Hindi in Mauritius and the Hindi Pracharini Sabha (2003), Reflection on the interview of Shri Prahlad Ramsurrun (1993), काव्य प्रवेश (कविता संग्रह), दुर्गा (लघुकथा संग्रह), सुस्मिता (लघुकथा संग्रह), मणिलाल डॉक्टर, दर्द अपना-अपना इत्यादि आपके प्रमुख प्रकाशन व संपादित पुस्तकें हैं।

आपके प्रकाशित लेख इस प्रकार हैं - श्री जयनारायण रॉय - इंद्रधनुष (1994), श्री एस. ए. भगत - इंद्रधनुष (1993), प्राथमिक स्कूलों में हिंदी - गगनांचल (1985), विश्व हिंदी पत्रिका, आदि।

आपने 1983-1991 तक 'स्वदेश हिंदी वीक्ली' का संपादन किया, हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'पंकज' पत्रिका का 1993 से संपादन करते आए व हिंदी संगठन द्वारा प्रकाशित 'सुमन' पत्रिका के संपादक तथा स्मारिका के सह-संपादक भी रहे। आपने एल. पी. रामयाद कृत The Establishment of Modern Standard Hindi in Mauritius का हिंदी में अनुवाद किया।

सम्मान व पुरस्कार

आपको 2015 में भोपाल, भारत में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में 'विश्व हिंदी सम्मान' से विभूषित किया गया।

शिक्षण के क्षेत्र में आपके योगदान के लिए आपको मॉरीशस गणराज्य की सरकार द्वारा गणतंत्र दिवस 2002 के अवसर पर ओ.एस.के. (OSK-Officer of the Order of the Star and Key of the Indian Ocean) की उपाधि दी गई।

2001 में आपको विश्व हिंदी एवं संस्कृति अलंकार संस्थान, बरेली, भारत द्वारा 'हिंदी रत्न सम्मान' दिया गया।

2013 में शब्द सेतु व आधुनिक साहित्य द्वारा आपको 'अंतरराष्ट्रीय वाघेश्वरी सम्मान' से विभूषित किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से स्वर्गीय महानुभावों को भावभिनी श्रद्धांजलि।

संपादकीय

हिंदी की त्रिशंकु पीढ़ी का दर्द

मॉरीशस में अजामिल माताबदल, सूरीनाम में श्री अमर सिंह रमण और भारत में हिंदी के कई दिग्गज। देखिये... इस बार फिर हिंदी के अग्रजों के प्रति 'श्रद्धांजलि' सूचनापत्र का एक पूरा पन्ना ले गई... हर अंक में ले जाती है। आप भी सोचेंगे कि वहाँ हिंदी की इतनी बड़ी क्षति हो रही है यहाँ इसको अपने सूचनापत्र के एक पन्ने की पड़ी है। अन्यथा न लें। समस्या उस पन्ने की नहीं है जो उनके प्रति श्रद्धांजलि भर जाती है। समस्या उस खालीपन की है जो वे छोड़ जाते हैं। वे तमाम पन्ने जो उनके रहने से, उनके सक्रिय रहने से भरते... उनका खालीपन। सतत कर्मठता को जीवन दर्शन माननेवाली एक पीढ़ी की ज़मीन से जुड़ी सक्रियता के अभाव का खालीपन!

हर पाठक इस बात को अपने देश के संदर्भ में बहतर समझेगा। चाहे वह भारत हो या मॉरीशस, सूरीनाम हो या दक्षिण अफ्रीका लेकिन यह स्पष्ट करना समीचीन लग रहा है कि यहाँ इस बात का विशेष सम्बंध और संदर्भ उन भारतेतर हिंदी समुदायों से है जिन्हें सुविधावश 'प्रवासी' कहा जाता है और जिनकी समाजभाषावैज्ञानिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक विशेषताएँ उनको कुछ विशिष्ट स्थितियों और समस्याओं से रूबरू कराती हैं।

इन देशों में हिंदी की स्थिति की विशेषताएँ, उसकी रक्षा व प्रसार के लिए अनिवार्य संघर्ष और उसकी दिशाएँ निर्धारित करने की जद्दोजहद से जो अवगत हैं उनके संचित अनुभव के आधार पर कह सकते हैं कि इन देशों में हिंदी के पहले कदम से लेकर उसकी वर्तमान गतिमानता तक के लिए ***स्थानीय तौर पर ज़मीन से जुड़कर, वास्तविकताओं के धरातल पर खड़ा होकर सतत संघर्षरत रहते हुए पूरी निष्ठा के साथ निरंतर प्रयासरत रहने की आवश्यकता रही है।***

ऐसे देशों में अजामिल माताबदल और अमर सिंह रमण जैसे लोग व्यक्ति नहीं, अग्रजों की पीढ़ी की उसी विचारधारा के प्रतिनिधि हैं। एक विचारधारा जो भाषा के लिए अपना समय, पैसा, ऊर्जा और कुछ को घर-जायदाद तक फूँक डालने के लिए प्रेरित करती है। कई अभी भी फूँक रहे हैं। इसलिए इनको हम हिंदी के सेवक नहीं हिंदी के मिशनरी कहना उचित मानते हैं।

वर्षों पहले जब हिंदी के क्षेत्र की समझ बनाने के प्रयास में अग्रजों की इस पीढ़ी से निकट का सम्पर्क स्थापित हुआ तो आरम्भ अनेक विषयों पर मतभेद के साथ ही हुआ। मतभेद के अनेक विषयों में एक यह था कि उनकी पीढ़ी और हमारे बाद की पीढ़ी के बीच की खाई बहुत गहरी हो रही है। उसको पाटने के लिए नए माध्यमों, नए तकनीकों की आवश्यकता है। उस समय भी हिंदी के ऑनलाइन प्रसार का जोश बहुत था (अभी उससे भी अधिक है : उसका महत्व अपनी जगह अक्षुण्ण है और इस विचाराभिव्यक्ति से उसपर संदेह पैदा करना ध्येय नहीं है)। इस दिशा में कदम उठाए भी। सफलता, खट्टे-मीठे अनुभव और सार्थकता सब के दर्शन हुए।

लेकिन हिंदी को नेट और क्लाउड पर सशक्त बनाने के लिए जिस पीढ़ी को चुना उसकी प्रवृत्ति पर धीरे-धीरे अचम्भा होने लगा है। वह कविता, कहानी ऑनलाइन लिखने लगी, सम्पर्क सम्बंध ऑनलाइन बनाने लगी। ठीक है। भविष्य में उसका लेखन अधिक सरलता से दुनिया को उपलब्ध होगा, यह भी विश्वास है। लेकिन अब तो ऐसा लग रहा है जैसे वह सारे काम ऑनलाइन ही करती रहेगी। कवि सम्मेलन के निमंत्रण से लेकर उसकी खबर तक को ऑनलाइन ही पढ़ेगी। परिचर्चा, सम्मेलन में ऑनलाइन ही उपस्थित रहेगी। श्रद्धांजलि सभा से भी ऑनलाइन ही जुड़ेगी। इ-हिंदी अभियान की तमाम सकारात्मक उपलब्धियों के बीच यह कभी नहीं सोचा था कि यह पीढ़ी इतनी जल्दी अपना पूरा अस्तित्व ऑनलाइन ही जीने की सुविधाजनक स्थिति से इतना स्नेह कर बैठेगी कि पोस्टरों और खबरों को लाइक करके थोड़ा बहुत शेयर करने में ही अपने कर्तव्यों की इति मान लेगी। क्लाउड से सम्पर्क में आने पर ***ज़मीन से जुड़कर, वास्तविकताओं के धरातल पर खड़ा होकर सतत संघर्षरत रहते हुए पूरी निष्ठा के साथ निरंतर प्रयासरत रहने की उस आवश्यकता*** से रिश्ता ही नहीं जोड़ पाएगी... यह नभचारी पीढ़ी।

इन दोनों के बीच में है... मेरी पीढ़ी।

मिशनरियों के संघर्ष से स्थापित तंत्रों, प्रणालियों, संस्थाओं और प्राप्त सुविधाओं की बदौलत आज इसी पीढ़ी के पास हिंदी की सबसे बड़ी शैक्षणिक उपाधियाँ हैं, अनेकानेक विषयों पर शोध ग्रंथ हैं और विशेषकर, वह मेरी ही पीढ़ी है जिसमें हिंदी की नौकरी से रोटी पानेवालों की संख्या सर्वाधिक है। सृजनात्मक लेखन के अतिरिक्त मॉरीशस की हिंदी को विश्व में गौरवांवित करनेवाले कारणों का संचय है इस पीढ़ी में। पुरानी पीढ़ी की संघर्षों का सुंदर फल।

ऐसा नहीं कि मेरी अपनी पीढ़ी की व उसमें समस्याएँ नहीं हैं।

मिशनरियों की पीढ़ी का तत्काल उत्तराधिकारी होने और हिंदी के क्षेत्र में शैक्षणिक उत्कृष्टताओं के बावजूद इस पीढ़ी में भाषा के प्रति सक्रिय चेतना की मात्रा उतनी नहीं दिखती। काम तो बहुत हो रहा है। लेकिन हिंदी के ज्ञान के अनुपात में, शिक्षा की उपलब्धता और अध्ययन की सुविधाओं के अनुपात में देखें तो "हिंदी से पाने बनाम हिंदी को देने" का जो अनुपात पुरानी पीढ़ी में था वह हम तक आते-आते निश्चित ही परिवर्तित हो गया।

अग्रजों में कम शिक्षा पाने अथवा हिंदी क्षेत्र से रोज़गार न पानेवाले भी अनेकानेक समर्पित जन मिल जाते थे। कोई अंग्रेज़ी अध्यापक, कोई किसान, कोई स्वास्थ्य कर्मचारी। इनमें से एक तो बैरिस्टर भी थे जिन्होंने यहाँ तक कहा कि "शायद मैंने कानून की पढ़ाई इसलिए की कि मैं हिंदी की वकालत कर सकूँ"। वहीं मेरी पीढ़ी में, जिसको हिंदी से सर्वाधिक लाभ हो रहा है, उस मिशनरी प्रवृत्ति की जगह एक 'कर्मचारी' प्रवृत्ति घर करती दिख रही है। काम में पूरी ईमानदारी है। लेकिन वह 'काम' नौकरी की शर्तों और समय की परिधियों से बाहर निकलने में कठिनाई का अनुभव कर रहा है। गाँव की बैठका अनाथ हो रही है। कार्यक्रमों में कुर्सियाँ खाली रह रही हैं। पत्रिकाओं के पन्ने भरने और पाठक खोजने में कठिनाई हो रही है।

आप सहमत होंगे न कि इस देश की और इस जैसे भाषा समुदायों की विशेषताओं को देखते हुए यहाँ भाषा के लिए स्कीम ऑव ड्यूटी की सीमाओं में बंधे कर्तव्य-बोध से काम नहीं चलता। कुछ कम पड़ ही जाता है। पूर्णकालिक कर्मचारी के मन में कम से कम अंशकालिक मिशनरी भाव हो तो हिंदी की ऊर्जा गतिमान रह सकेगी। ख़ैर, यहाँ बात इस विशेष उत्तरदायी पीढ़ी की समस्याओं की नहीं हो रही है जिनसे वह यथासम्भव जूझ ही रही है। बात है बीच की इस पीढ़ी के दर्द की।

मेरी पीढ़ी आज जब पीछे देखती है तो आशीर्वाद और प्रेरणा देनेवाले हाथों से एक-एक करके सम्पर्क टूटता जा रहा है। आगे देखती है तो एक ऐसी पीढ़ी है जो असम्पृक्त होती सी दिखती है। और मेरी जमात पर भार है विरासत को आगे बढ़ाने का। ऐसा मत सोचिएगा कि हिंदी की चर्चा यहाँ किसी पूर्वजीय विरासत के रूप में की जा रही है जिसका संरक्षण करने का अर्थ उसे संग्रहालय में डालकर विशेष दिनों पर याद करना और समारोह मनाने से किया जा सकेगा। यहाँ विरासत हिंदी नहीं है। विरासत है भाषा के प्रति कुछ विशेष भाव। वे जो भाषा के ऐतिहासिक योगदान पर आस्था और उसके भविष्य पर विश्वास के साथ ***ज़मीन से जुड़कर, वास्तविकताओं के धरातल पर खड़ा होकर सतत संघर्षरत रहते हुए पूरी निष्ठा के साथ निरंतर प्रयासरत रहने की आवश्यकता*** से नाता जोड़ती है? क्या अग्रजों की वह पीढ़ी विरासत में केवल किताबें, संस्थाएँ, शिक्षण व्यवस्थाएँ, नौकरियाँ, सुविधाएँ ही छोड़ जा रही है। भावनाएँ क्या उनके साथ ही चली जाएँगी?

ज़मीन से जुड़े मिशनरियों की विदा लेती पीढ़ी और क्लाउड पर स्थापित अपने अस्तित्व की दुनिया में कर्तव्यों की इति समझनेवाले नभचारियों की असम्पृक्त पीढ़ी के बीच हिंदी के अनासक्त-से कर्मचारियों की इस त्रिशंकु पीढ़ी के दर्द की कोई दवा है आपके पास?

सोचिए... हम सोच ही रहे हैं।

गंगाधरसिंह सुखलाल
कार्यवाहक महासचिव

प्रधान संपादक : श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
सहायक संपादक : सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
संपादन सहयोग :
श्रीमती उषा राम, सुश्री त्रिशिला सोमर, सुश्री चित्रलेखा रामदोयाल, श्रीमती प्रियंवदा मातापलत, सुश्री कविता गोबुधन
***
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius
फ़ोन/Phone: (230) 676 1196 * फ़ैक्स/Fax: (230) 676 1224
इमेल/Email: info@vishwahindi.com
वेबसाइट/Website: www.vishwahindi.com
***
Printed by **BAHADOOR PRINTING LTD.**
Avenue St. Vincent de Paul-Pailles
Tel: (230) 2081317